04 - धर्मनिरपेक्षता पर सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के निहितार्थ

05 - आत्मनिर्भरता की ओर किशोरियों का पहला कदम

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 26 अक्टूबर, 2024

06 - मिठाई, नमकीन सहित खाद्य पदार्थों के लिए सेम्पल, आने वाले दिनों में भी जारी...

07- सफाई बेड़े को मिला मडपंप मशीन ट्रेक्टर स्वच्छ भारत मिशन...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-58 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

कॉमनवेल्थ गेम्स से हटाए खेल : भारतीय एथलीटों पर क्या होगा असर

आशुतोष कुमार सिंह

साहिल के सुकूं से किसे इंकार है लेकिन तूफान से लड़ने में मजा और ही कुछ है अब मान लीजिए शायर आल-ए-अहमद सुरूर से यह शेर लिखने के बाद कहा गया होता कि आप समंदर में उतरेंगे जरूर लेकिन बिना कोई नाव, बिना कोई पतवार। फिर क्या वो तूफान से लड़ने में मजा खोजते.. भारत के साथ भी गलासगो में होने जा रहे कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में कुछ ऐसा ही हुआ है। भारत जिन स्पोर्ट्स में मेडल्स का प्रबल दावेदार रहा है उन्हें गेम्स की लिस्ट से ही बाहर कर दिया गया है। पिछली बार 2022 में बर्मिंघम, इंग्लैंड के अंदर भारत ने कुल 61 मेडल्स जीते थे, जिनमें से 30 यानी 49त्न तो उन स्पोर्ट्स में आए थे जो 2026 में खेले ही नहीं जाएंगे।

हम आपको बता दें कि 2026 कॉमनवेल्थ गेम्स में से किन-किन स्पोर्ट्स को बाहर किया गया है और क्यों? इससे भारत के मेडल टैली पर कितना असर पड़ेगा? इस हटाए गए स्पोर्ट्स में भारत का कितना दबदबा रहा है? भारत के कौन-कौन से बड़े नाम इस इवेन्ट को मिस करेंगे?

बैडमिंटन, क्रिकेट, हॉकी, स्क्वैश, टेबल टेनिस, ट्रायथलॉन, कुश्ती, बीच वॉलीबॉल और रग्बी सेवन्स - ये ऐसे 9 स्पोर्ट्स हैं जो बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स में तो थे लेकिन 2026 में होने जा रहे ग्लासगो कॉमनवेल्थ गेम्स में नहीं होंगे। बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स में कुल 19 अलग-अलग स्पोर्ट इवेंट थे जो अगली बार कम होकर केवल 10 रह जाएंगे।

बता दें कि निशानेबाजी और तीरंदाजी को 2022 बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स में हटाया गया था। इन दोनों ही इवेंट में भारत का प्रदर्शन शानदार रहा है। दरअसल भारत को कॉमनवेल्थ गेम्स के इतिहास में सबसे अधिक मेडल (135 मेडल) निशानेबाजी में ही मिले हैं।

कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 का आयोजन पहले ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया राज्य में किया जाना था। लेकिन इसे होस्ट करने की बढ़ती लागत के कारण उन्होंने ऐसा नहीं किया और कदम पीछे खींच लिए। इसके बाद कॉमनवेल्थ गेम्स फेडरेशन ने दूसरा मेजबान ढूंढने के लिए संघर्ष किया और आखिरकार ग्लासगो, स्कॉटलैंड को मेजबान बनाया गया।

लेकिन यहां भी आयोजन में आने वाले खर्च और तैयारी के लिए कम वक्त की परेशानी आ रही। लागत कम रखने के लिए, कॉमनवेल्थ गेम्स एक छोटे दायरे में मौजूदा स्थानों पर होंगे। एथलीटों और उनके साथ आने वालों को नए कॉमनवेल्थ विलेज के बजाय मौजूदा होटलों में ठहराया जाएगा। तय हुआ है कि केवल 4 वेन्यू पर ही कॉमनवेल्थ गेम्स आयोजित होंगे और इस वजह से 9 स्पोर्ट्स को हटा दिया गया है।

इसका भारत की मेडल टैली पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इस सवाल का जवाब खुद भारत की कॉमनवेल्थ मेडल टैली देती हैं। भारत ने 2022 के बर्मिंघम गेम्स में कुल 61 पदक जीते थे। इनमें से 30 मेडल उन खेलों में थे जो 2026 ग्लासगो गेम्स में मौजूद नहीं होंगे। यानी यह आंकड़ा 49 प्रतिशत का है। इस तरह यकीनन भारत की मेडल की दावेदारी सीधे आधी होनी की संभावना है।

इसी तरह 2018 के गोल्ड कोस्ट, ऑस्ट्रेलिया गेम्स में भारत ने कुल 66 मेडल जीते थे। इनमें से 28 यानी 42त्न उन खेलों में आए थे जो हटाए गए हैं।

याद रहे कि 2014 में भी कॉमनवेल्थ गेम्स ग्लासगो, स्कॉटलैंड में ही हुए थे। उस समय भारत ने कुल 64 मेडल जीते थे जिनमें 20 मेडल यानी 31 प्रतिशत हटाए गए गेम्स में आए थे।

भारत ने कॉमनवेल्थ गेम्स में सबसे शानदार प्रदर्शन 2010 में किया था जब इसकी मेजबानी खुद नई दिल्ली ने की थी। उस साल भारत ने 100 का माइलस्टोन पार करते हुए कुल 104 मेडल अपने नाम किए थे। इनमें से 29 मेडल यानी 29 प्रतिशत हटाए गए गेम्स में आए थे।

भारत ने कॉमनवेल्थ गेम्स के अपने इतिहास में निशानेबाजी (135 मेडल) और वेटलिफ्टिंग (133 मेडल) के बाद सबसे अधिक मेडल कुश्ती (115 मेडल) में ही जीते हैं। इसके अलावा बैडमिंटन में 31 और टेबल टेनिस में अब तक 28 कॉमनवेल्थ मेडल भारत अपने नाम कर चुका है। यह भी ख्याल रखने वाली बात है कि जिन 10 खेलों को 2026 गेम्स में बरकार रखा गया है, उनमें से बॉक्सिंग, जूडो और वेटलिफ्टिंग जैसे खेलों में भारत के प्रदर्शन में काफी गिरावट आई है और ओलंपिक में प्रदर्शन निराशाजनक रहा है।

बॉक्सिंग में भारत को 2022 बर्मिंघम गेम्स में 7 मेडल्स मिले थे लेकिन इसमें से 4 बॉक्सर तो ओलंपिक 2024 में क्वॉलिफाई ही नहीं कर पाए थे। बर्मिंघम गेम्स में वेटलिफ्टिंग के अंदर 10 मेडल जितने वाले भारत की तरफ से केवल मीराबाई चानू ओलंपिक पहुंचीं लेकिन वो भी पोडियम से दूर रहीं। जूडो की बात करें तो बर्मिंघम गेम्स में भारत के दोनों मेडलिस्ट ओलंपिक के लिए क्वॉलिफाई नहीं कर सके।

इसका मतलब यह है कि पीवी सिंधु, बजरंग पुनिया जैसे ओलंपिक मेडल विजेता से लेकर भारतीय मेंस हॉकी टीम की स्पष्ट कमी भारत को खलने जा रही है। अमन सहरावत, अंतिम पंघाल जैसी भारत की उभरती कुश्ती प्रतिभाओं की दावेदारी कॉमनवेल्थ में बहुत मजबूत होती लेकिन उन्हें इंतजार करना होगा। इन खिलाड़ियों और एथलीट के लिए कॉमनवेल्थ गेम्स में जीते मेडल अक्सर आर्थिक पुरस्कार और सरकारी नौकरियों के मार्ग होते हैं। ये एक एथलीट के करियर की संभावनाओं और उनके फाइनेंसियल सेक्यूरिटी के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। लेकिन ऐसे कई एथलीट को अब कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए 2030 यानी 8 साल का इंतजार करना होगा। एक एथलीट के जीवन में 8 साल का फासला बहुत बड़ा होता है। ऐसे में यह याद रखना चाहिए कि किसी एथलीट के लिए कॉमनवेल्थ गेम्स की अपेक्षा एशियन गेम्स और ओलंपिक में कहीं ज्यादा प्रेशर होता है क्योंकि वहां कंपटीशन कहीं ज्यादा टफ होता है।

ऐसे में नए उभरते हुए एथलीट के लिए कॉमनवेल्थ बहुत बड़ा प्लैटफॉर्म होता है। नीरज चोपड़ा ने 2018 कॉमनवेल्थ गेम्स में ही गोल्ड जीतकर भारतीय खेल जगत में अपनी एंट्री की घोषणा की थी।

(दि क्विंट हिंदी पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बंगाल और ओड़िशा में 'दाना' ने ढाया कहर

कहीं उखड़े पेड़, किसी के घर की उड़ गई छत, तूफान से भयंकर तबाही

कोलकाता (एजेंसी)। बंगाल की खाड़ी से उठा चक्रवाती तूफान 'दाना' गुरुवार रात 12.05 बजे ओडिशा के तट से 110 किमी की रफ्तार से टकराया। सुबह करीब 8.30 बजे तूफान की लैंडफॉल प्रोसेस खत्म हुई। 8.30 घंटे में तूफान की रफ्तार 110 किमी से घटकर 10 किमी हो गई। 'दाना' के असर से ओडिशा और पश्चिम बंगाल में बारिश हो रही है। भद्रक, केंद्रपाड़ा में 30 सेमी से ज्यादा बारिश का अनुमान है। सीएम मोहन चरण माझी ने कहा- 5.84 लाख लोगों को रिलीफ कैंप में शिफ्ट किया है। कई इलाकों में पेड़ उखड़े, गाड़ियां भी डैमेज हुईं। कोलकाता और भुवनेश्वर एयरपोर्ट पर फ्लाइट ऑपरेशन शुरू हो गया है। कोलकाता से पहली फ्लाइट सुबह 8.40 बजे रवाना हुई। वहीं, रेलवे ने कहा कि कैंसिल ट्रेनों को छोड़ दें तो ओडिशा और पश्चिम बंगाल जाने वाली बाकी ट्रेनें शेड्यूल के हिसाब से चलेंगी। भुवनेश्वर और कोलकाता एयरपोर्ट पर गुरुवार शाम 5 बजे से शुक्रवार सुबह 8 बजे तक 300 फ्लाइट्स कैंसिल रहीं। वहीं, साउथ ईस्ट रेलवे, ईस्ट कोस्ट रेलवे, ईस्टर्न रेलवे और साउथ ईस्ट सेंट्रल रेलवे की 552 ट्रेनें रद्द की गईं। ओडिशा के अलावा तूफान का असर पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ और तमिलनाडु में भी देखने को मिला। पश्चिम बंगाल सरकार ने 83 हजार लोगों को रिलीफ कैंप में पहुंचाया। दाना चक्रवाती तूफान का असर ओडिशा और पश्चिम बंगाल में देखने को मिल रहा है। तेज बारिश के साथ हवा के तेज झोंके ने जमीन पर भारी तबाही मचाई है। कहीं पेड़ उखड़ चुके हैं तो कहीं बिजली के खंबे भी गिरे हैं। राहत की बात यह है कि अभी तक किसी की मौत नहीं हुई है, इस तूफान ने जानलेवा रूप नहीं लिया है। लेकिन जो तस्वीरें सामने आ रही हैं, वो डराने वाली हैं, साफ पता चल रहा है कि नुकसान काफी हुआ है। दाना तूफान को लेकर मौसम विभाग ने बताया है कि यह 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उत्तर-उत्तरपश्चिम की ओर बढ़ चला है। तूफान की वजह से कई इलाकों में सड़कें भी टूट चुकी हैं।

सुप्रभात

ये दाढ़ियाँ ये तिलक
धारियाँ नहीं चलतीं
हमारे अहद में
मक्कारियाँ नहीं चलतीं
क़बीले वालों के दिल
जोड़िए मिरे सरदार
सरों को काट के
सरदारियाँ नहीं चलतीं
बुरा न मान अगर यार
कुछ बुरा कह दे
दिलों के खेल में
ख़ुद्दारियाँ नहीं चलतीं
छलक छलक पड़ीं आँखों की
गागरें अक्सर
सँभल सँभल के ये
पनहारियाँ नहीं चलतीं
जनाब-ए-'कैफ़' ये दिल्ली है
'मीर' ओ 'ग़ालिब' की
यहाँ किसी की
तरफ़-दारियाँ नहीं चलतीं।

- कैफ़ भोपाली

पूर्वी लद्दाख में भारत-चीन की सेनाएं

पीछे हटना हो गईं शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और चीन के बीच 4 दिन पहले हुए समझौते के बाद शुक्रवार को दोनों देशों की सेनाएं पूर्वी लद्दाख सीमा से पीछे हटना शुरू हो गई हैं। न्यूज एजेंसी के मुताबिक पूर्वी लद्दाख के डेमचोक और देपसांग पॉइंट में दोनों सेनाओं ने अपने अस्थायी टेंट और शेड हटाना शुरू कर दिए हैं। गाड़ियां और मिलिट्री उपकरण भी पीछे ले जाई जा रही हैं। समझौते के मुताबिक सेनाओं के पीछे हटने के बाद दोनों देशों की सेनाएं लद्दाख के देपसांग और डेमचोक इलाकों में पेट्रोलिंग कर सकेंगी। यह पेट्रोलिंग 10 दिन बाद शुरू हो सकती है। भारत और चीन दोनों की सेनाएं पीछे हटनी शुरू हो गई हैं। एलएसी एग्रीमेंट के बाद दोनों ही देश की तरफ से यह फैसला लिया गया है।

- झड़प टालने के लिए अलग-अलग दिन पेट्रोलिंग करेंगी

दीवाली से पहले सीएम योगी का बड़ा गिफ्ट

- अगले 19 दिनों तक 24 घंटे मिलेगी बिजली

लखनऊ (एजेंसी)। दीवाली का त्योहार पास आ चुका है। सभी राज्य की सरकारें अपने-अपने कर्मचारियों और प्रदेश के लोगों को दीवाली गिफ्ट दे रही हैं। किसी ने गैस सिलेंडर मुफ्त कर दिया है तो किसी ने 24 घंटे बिजली देने का ऐलान कर दिया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे यह सुनिश्चित करें कि 28 अक्टूबर से 15 नवंबर तक राज्य में किसी तरह से बिजली कटौती ना हो। गुरुवार को मीटिंग में सीएम योगी आदित्यनाथ ने धनतेरस, दिवाली, भैयादूज, छठ पूजा से लेकर 15 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा तक प्रदेश को बिजली कटौती से मुक्त रखने के निर्देश दिए।

राज्यपाल और सीएम ने शिक्षकों को किया सम्मानित

शिक्षक, आदर्श समाज और राष्ट्र के शिल्पकार हैं : राज्यपाल श्री पटेल

संस्कार आधारित शिक्षा पर केंद्रित है नई शिक्षा नीति : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि शिक्षक, आदर्श समाज और राष्ट्र के शिल्पकार हैं। उनकी महत्ता इस बात से ही समझी जा सकती है कि माता-पिता, बच्चों को जन्म और संस्कार देते हैं, जबकि शिक्षक उन्हें ज्ञान, संस्कार और जीवन मूल्यों के साथ आदर्श नागरिक बनाते हैं। शिक्षा प्रगति की पहली सीढ़ी है। यह समाज में समानता, स्वावलम्बन और स्वाभिमान के गुणों को विकसित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि विद्यार्थियों में देश प्रेम के साथ गरीब, वंचित और जरूरतमंदों की मदद के गुणों को विकसित करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि शिक्षक, अपना काम यह मानकर करें कि वे न सिर्फ बच्चों को विद्यादान कर रहे हैं बल्कि विकसित और विश्वगुरू भारत के निर्माण में योगदान भी दे रहे हैं। राज्यपाल श्री पटेल प्रशासन अकादमी में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान तथा गणवेश राशि वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने समारोह की अध्यक्षता की।

तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की सामर्थ्य और भारतीय संस्कृति के गर्व का आधार है श्रीमद् भगवद् गीता : सीएम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि नई शिक्षा नीति के माध्यम से पाठ्यक्रम में संस्कार आधारित शिक्षा के समावेश और क्रियान्वयन के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति में ऐतिहासिक रूप से गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष महत्व रहा है। इसी का परिणाम है कि भारतीय समाज ने हर काल परिस्थिति में देश के सामने आने वाली चुनौती में प्रभावी तरीके से महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। हर चुनौती पूर्ण स्थिति में देश की शैक्षणिक संस्थाएं अपने दायित्व निर्वहन में सक्रिय और सजग रही हैं। भगवान श्रीराम के काल में शिष्य के रूप में प्रशिक्षित हो रहे श्रीराम और लक्ष्मण ने भी दृढ़ता पूर्वक तत्कालीन चुनौतियों का सामना किया। भगवान श्रीकृष्ण सांदीपनि आश्रम आकर 64 कला, 14 विद्या, 18 पुराण, चारों वेद और शस्त्र और शास्त्र के बीच तालमेल में निपुण हुए।

जिस मांस के शक में हत्या वह गोमांस नहीं निकला

लैब रिपोर्ट से खुलासा

- हरियाणा में मुस्लिम युवक को सरेआम डंडे से पीट-पीटकर मारा था

चरखी दादरी (एजेंसी)। हरियाणा में चरखी दादरी जिले के बाढड़ा कस्बे में 27 अगस्त को मुस्लिम युवक साबिर मलिक की गोमांस खाने के शक में हत्या की गई, वह गाय का मांस नहीं था। इसका पता लैब रिपोर्ट से चला है। साबिर पश्चिम बंगाल का रहने वाला था। पुलिस इस मामले में 2 नाबालिगों समेत 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। आरोप है कि इन्होंने कबाड़ देने के बहाने साबिर को बुलाया और पीट-पीटकर मार डाला। मामले का खुलासा तब हुआ, जब 31 अगस्त को मारपीट का एक वीडियो वायरल हुआ।

इसमें पता चला कि आरोपियों ने साबिर समेत 2 युवकों की डंडों से पिटाई की थी। पूछताछ में आरोपियों ने दावा किया था कि साबिर और उसके साथी गोमांस खाते हैं। हिंदू संगठनों से जुड़े इन आरोपियों ने यह भी कहा था कि उनके बर्तनों से गोमांस मिला। पुलिस ने इस मांस को जब्त कर इसके सैंपल जांच के लिए भेजे थे। बाढड़ा के भारत भूषण ने बताया कि मांस के सैंपल जांच के लिए फरीदाबाद की लैब को भेजे गए थे। हमें वहां से उसकी रिपोर्ट मिली है। ये प्रतिबंधित मांस नहीं था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 26 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

महाराष्ट्र में ऐसा फंसा पेंच की खुद शाह को आना पड़ा

नई दिल्ली/मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी के बीच सीट शेयरिंग को लेकर शुरुआती समझौता हो चुका है। अब तक तीनों दलों ने 255 सीटें आपस में बांट ली हैं और सबके खाते में 85-85 सीटें आई हैं लेकिन अब तक भाजपा की लीडरशिप वाले महायुति ने किसी औपचारिक समझौते का ऐलान नहीं किया है। इस बीच होम मिनिस्टर अमित शाह खुद इस मामले को डील कर रहे हैं। उन्होंने बुधवार को महाराष्ट्र भाजपा के बड़े नेताओं को दिल्ली बुलाकर सीटों

पर मंथन किया था। इसके बाद गुरुवार को उन्होंने गठबंधन के नेताओं से तीन घंटे तक मंथन किया। सीएम एकनाथ शिंदे, डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार दिल्ली में थे। इन नेताओं के साथ अमित शाह ने कुल 25 सीटों को लेकर मंथन किया। खासतौर पर 5 सीटों को लेकर तीनों दलों के बीच खींचतान देखी जा रही है और कोई भी दावेदारी से पीछे हटता नहीं दिख रहा है। ऐसी स्थिति में शाह खुद ही अजित और शिंदे को समझौते के लिए राजी करने में जुटे हैं।

निज्जर आतंकी था, कनाडा ने पीठ पर छुरा घोंपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। खालिस्तानी नेता हरदीप सिंह निज्जर हत्याकांड को लेकर भारत और कनाडा के बीच संबंध सबसे निचले स्तर पर आ चुके हैं। कनाडा से लौट चुके भारतीय राजनयिक संजय वर्मा ने कहा कि निज्जर हमारे लिए आतंकवादी था, लेकिन लोकतंत्र में न्याय प्रणाली से परे कोई भी कृत्य गलत होता है तो सच सामने आना चाहिए। निज्जर हत्याकांड पर कनाडा ने अपने आरोपों से जुड़े सबूत अभी तक पेश नहीं किए हैं। कनाडा सरकार का कदम एक तरह से

पीठ पर छुरा घोंपने जैसा है। उन्होंने कनाडाई सरकार पर खालिस्तानी आतंकियों और चरमपंथियों को शरण देने का भी आरोप लगाया। जस्टिन ट्रूडो सरकार के निज्जर हत्याकांड को लेकर भारतीय राजनयिक संजय वर्मा को लगाए गंभीर आरोपों के बाद बड़ा कूटनीतिक विवाद शुरू हो गया है। जिसमें भारत ने अपने वरिष्ठ राजनयिकों को वापस बुला लिया और छह कनाडाई राजनयिकों को भी निष्कासित कर दिया।

कनाडा की मोस्ट वांटेड लिस्ट से गोल्डी बराड़ बाहर

अमृतसर (एजेंसी)। कनाडा सरकार ने भारत द्वारा वांटेड घोषित गैंगस्टर गोल्डी बरार का नाम अपनी मोस्ट वांटेड सूची से हटा दिया है। कनाडा सरकार के इस फैसले की वजह भारत और कनाडा के बीच पहले से ही तनावपूर्ण संबंधों में विवाद माना जा रहा है। कनाडा में छिपे गोल्डी बरार पर पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला की हत्या का आरोप है और भारत सरकार ने उसके खिलाफ इंटरपोल रेड नोटिस भी जारी किया था।

कनाडा में भारत के पूर्व उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा ने एनआईए को दिए इंटरव्यू में बताया कि कनाडा सरकार ने अप्रत्याशित रूप से कुख्यात गैंगस्टर गोल्डी बरार का नाम अपनी वांछित सूची से हटा दिया है। उन्होंने कहा कि कनाडा ऐसे अपराधियों और चरमपंथियों को पनाह दे रहा है जो भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकते हैं। कनाडा में बरार का नाम हटाने का फैसला दोनों देशों के बीच चल रहे कूटनीतिक मुद्दों का हिस्सा है। कनाडा का यह रवैया चरमपंथ के खिलाफ कार्रवाई में सहयोग की कमी को दर्शाता है।

महाकाल मंदिर में बदलेगी भस्मारती दर्शन की व्यवस्था

श्रद्धालुओं को रात 11 बजे से नहीं लगना होगा लाइन में

उज्जैन (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के उज्जैन में स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में तड़के होने वाली भस्मारती में शामिल होने के इच्छुक सामान्य श्रद्धालुओं के लिए एक खुशखबरी है। मंदिर प्रशासन जल्द ही भस्मारती के लिए नियम बदलने जा रहा है, जिससे सामान्य श्रद्धालुओं को अब रात 11 बजे से लाइन में नहीं लगना होगा। मंदिर प्रशासक गणेश धाकड़ नई व्यवस्था लागू करने जा रहे हैं, जिसे दीपावली के पहले से शुरू करने की तैयारी की जा रही है। इस नई व्यवस्था के तहत सामान्य श्रद्धालु रात 2 बजे सीधे मानसरोवर गेट से प्रवेश पा सकेंगे, इसके

पहले श्रद्धालुओ को रात भर लाइन में खड़े रहना पड़ता था, जिससे कि बच्चे, बुजुर्ग सहित महिलाएं परेशान होती थीं। उज्जैन के विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में महाकाल लोक बनने के बाद से ही यहां दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है,अब यहां भक्तों की संख्या चार गुना बढ़ गई है।

● दीवाली पर गर्भगृह में जलेगी सिर्फएक फुलझड़ी

होली पर्व पर हुए अग्निकांड हादसे के बाद महाकाल मंदिर में सुरक्षा की दृष्टि से मंदिर समिति ने निर्णय लिया है कि गृभगृह में पूजा के दौरान प्रतीकात्मक रूप में सिर्फ एक फुलझड़ी जलाई जाएगी। इस दौरान महाकाल मंदिर को विशेष लाइटिंग के साथ-साथ फूलों से भी सजाया जाएगा। मंदिर में 31 अक्टूबर को दीपावली मनाई जाएगी। इस दौरान पंडे, पुजारी सिर्फ एक फुलझड़ी जला सकेंगे। इसके अलावा किसी को भी महाकाल मंदिर परिसर में किसी भी तरह की आतिशबाजी और पटाखे जलाने की इजाजत नहीं होगी।

● फॉर्म लेने के लिए भी रातभर नहीं खड़ा रहना पड़ेगा

महाकाल मंदिर के प्रशासक गणेश धाकड़ ने बताया कि मंदिर समिति ने सामान्य श्रद्धालुओं के लिए 300 सीट की फ्री सुविधा दे रखी है। एक दिन पहले पहुंचने वाले श्रद्धालु रात में लाइन में लगकर सुबह फॉर्म लेते थे और फिर उसे भरकर जाते थे। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था को भी बदला जाएगा, अब श्रद्धालु रात में ही 10 बजे के करीब फॉर्म ले जाएंगे और सुबह 8 बजे के बाद आकर अपनी परमिशन बनवा लेंगे, इससे श्रद्धालु को रात भर लाइन में खड़ा नहीं रहना पड़ेगा। वर्तमान में श्रद्धालुओ को रात भर लाइन में खड़े रहकर सुबह 6 बजे फॉर्म दिया जाता था।

तेल में बड़ा खेल करने की तैयारी में मुकेश अंबानी !

● ऑयल ट्रेडिंग का पुनर्गठन कर रही है रिलायंस इंडस्ट्रीज

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की सबसे वैल्यूएबल कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज तेल के बिजनस में बड़ा फेरबदल करने की तैयारी में है। रॉयटर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक रिलायंस इंडस्ट्रीज अपने ट्रेडिंग ऑपरेशंस का पुनर्गठन कर रही है। इसमें दुबई से क्रूड ऑयल ट्रेडिंग टीम को वापस बुलाना शामिल है। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से यह दावा किया गया है। रिलायंस जामनगर में दुनिया का सबसे बड़ा रिफाइनिंग कॉम्प्लेक्स चलाती है। उसकी योजना इस साल के अंत तक दुबई से अपनी क्रूड ट्रेडिंग टीम को वापस बुलाने की है। सूत्रों का कहना है कि रिलायंस ने कच्चे तेल की सप्लाई के लिए रूस के साथ लॉन्ग-टर्म एग्रीमेंट किया है। इससे स्पॉट कार्गो खरीदने की जरूरत कम हो गई है। एक सूत्र ने कहा कि रिलायंस की अब रूस के साथ क्रूड इम्पोर्ट डील हो गई है।

ग्वालियर में पिता ने ही कराया बेटे का मर्डर

50 हजार रुपए में दी सुपारी; स्पॉट पर लेकर पहुंचा; नशे-जुए की लत से परेशान था

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में 21 अक्टूबर को हुई इरफान की हत्या मामले में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। इरफान के पिता हसन और हासिन खान ने ही सुपारी देकर उसे मरवाया था। हिस्ट्रीशीटर इरफान को जुआ, स्मैक और गांजे की लत थी। इसके चलते वो परिवार को परेशान करता था।

मामले में 20 से ज्यादा संदेहियों से पूछताछ करने के बाद पुलिस को कुछ क्लू मिले थे। एक से दूसरी कड़ी को छोड़कर पुलिस हसन तक पहुंची। जब उसको हिरासत में लेकर पूछताछ की तो वह टूट गया। उसने कहा कि बेटे ने जुए और नशे की लत में सब बर्बाद कर दिया था।

सिर और सीने में गोली मारकर हत्या की थी- ग्वालियर के पुरानी छावनी थाना निवासी इरफान (28) पुत्र हसन खान की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इरफान का शव बदनापुरा-अकबरपुर की पहाड़ी पर मिला था। वह सोमवार रात को बदनापुरा के

मृतक इरफान　　शराफत, आरोपी

पास ही एक शादी में शामिल होने के लिए निकला था। कार्यक्रम में उसके परिवार के कुछ और सदस्य भी थे। इरफान को रात 12 बजे तक शादी में देखा गया। इसके बाद उसका कुछ पता नहीं चल रहा था।

मंगलवार सुबह करीब साढ़े 11 बजे कुछ लोगों ने हसन को सूचना दी कि उनका बेटा इरफान लहूलुहान हालत में पहाड़ी पर पड़ा है। हसन परिवार के दूसरे सदस्यों को लेकर वहां पहुंचे तो इरफान दम तोड़ चुका था। उसके सिर और सीने में गोली लगने के निशान थे। खून जम गया था। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम कराने के बाद हत्या का मामला दर्ज कर लिया था।

पूछताछ में हसन की भूमिका संदिग्ध मिली- पुलिस को इरफान की लास्ट लोकेशन नहीं मिल रही थी। पिता हसन ने ही पुलिस को बताया था कि आखिरी बार उसे सोमवार रात को एक शादी में देखा था। उसके बाद से इरफान का कुछ पता नहीं चल रहा है।

पुलिस पूछताछ में पिता हसन की भूमिका संदिग्ध साबित हो रही थी। पुलिस ने परिवार के बारे में जानकारी निकाली तो पता लगा कि इरफान के नशे की आदत से सभी परेशान थे। वह नशे की हालत में पारिवारिक सदस्यों से बदसलूकी करता था। कई बार समझाने के बावजूद सुधार नहीं आ रहा था। पिता से अक्सर विवाद होता था।

इरफान के सिर और सीने में गोलियों के छेद बता रहे थे कि उसे प्रोफेशनल शूटर्स ने गोली मारी है। पुलिस ने इन्हीं पॉइंट्स पर अपनी जांच आगे बढ़ाई।

50 हजार रुपए में दो लोगों को दी थी सुपारी

जब पुलिस ने सख्ती से पूछताछ की तो हसन टूट गया। उसने बेटे की हत्या कराने की बात कबूल ली। पुलिस को बताया कि उसने इरफान की हत्या करने के लिए अर्जुन उर्फ शराफत खान और भीम सिंह परिहार को 50 हजार रुपए में सुपारी दी थी। घटनास्थल तक वह खुद इरफान को लेकर पहुंचा था। यहां से शूटर्स उसे कुछ दुश्मनों को फंसाने के लिए हाथ में गोली मारने की बात कहकर साथ ले गए थे।

पुलिस ने शूटर अर्जुन उर्फ शराफत खान (39) निवासी अकबरपुर पहाड़िया मस्जिद के पास, थाना पुरानी छावनी और भीम सिंह परिहार (30) निवासी हेम सिंह की परेड, थाना माधवगंज की तलाश शुरू कर दी है।

हरियाणा की हार का यूपी में दिखा साइड इफेक्ट

साइकिल पर 'हाथ' तक नहीं रखने दे रहे अखिलेश

लखनऊ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों का असर यूपी में होने वाले विधानसभा उपचुनाव पर भी पड़ता दिख रहा है। जीती हुई बाजी हरियाणा में हारने वाली कांग्रेस को यूपी में अखिलेश यादव ने ज्यादा सीटें नहीं दीं, जिसके बाद पार्टी ने अपना उम्मीदवार देने से मना कर दिया। कांग्रेस के सिंबल पर कोई भी उम्मीदवार मैदान में नहीं होगा। महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव के साथ ही यूपी में भी 9 सीटों पर उपचुनाव होना है। समाजवादी पार्टी (सपा) ने सभी सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए हैं। हालांकि, खैर विधानसभा सीट से बसपा से कांग्रेस में शामिल हुईं चारू कैन को टिकट दिया है, लेकिन वह भी सपा के

ही चुनाव चिह्न पर मैदान में होंगी। पहले अटकलें लगाई जा रही थीं कि नौ सीटों में से पांच या छह पर सपा तो चार या तीन पर कांग्रेस चुनाव लड़ सकती है, लेकिन ऐसा हो नहीं सका। अखिलेश यादव ने कांग्रेस के 'हाथ' को सपा की 'साइकिल' देने से दूरी बना ली। लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन के बैनर तले लड़ने वाली कांग्रेस और सपा ने यूपी में शानदार प्रदर्शन किया था।

यूपी में कांग्रेस का हाल बेहाल

यूपी में भले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और सपा वाले इंडिया गठबंधन को जबरदस्त फायदा हुआ हो, लेकिन विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की हालत पतली ही है। लोकसभा और विधानसभा चुनावों में ज्यादातर अलग-अलग पैटर्न पर वोटिंग देखी गई है और यही वजह है कि आम चुनाव के नतीजे ही विधानसभा उपचुनाव में भी परिवर्तित होते, इसकी कोई गारंटी नहीं। यूपी में अकेले कांग्रेस की कोई जमीन नहीं है। अमेठी-रायबरेली जैसे जिलों में ही कांग्रेस को बड़ी संख्या में वोट मिलते रहे हैं, जबकि बाकी जगह हाल बेहाल रहा है। इन्हीं सब समीकरणों को देखते हुए अखिलेश यादव उपचुनाव में बड़ा फैसला लेने के लिए मजबूर हुए। हालांकि, अखिलेश ने साफ किया है कि भले ही कांग्रेस के टिकट पर उम्मीदवार चुनाव नहीं लड़ रहे हों, लेकिन इंडिया और पीडीए गठबंधन बना हुआ है। अखिलेश यादव ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि बात सीट की नहीं, जीत की है।

● महाराष्ट्र-झारखंड में पूरा फोकस रखना चाहती है कांग्रेस

हरियाणा में हार के बाद अब कांग्रेस के लिए महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव काफी अहम हो गए हैं। अभी सिर्फ तीन राज्यों में ही कांग्रेस की पूर्ण सरकारें हैं। कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश। पार्टी को न सिर्फ झारखंड की अपनी गठबंधन सरकार को कायम रखना है, बल्कि महाराष्ट्र में भी वापसी करनी है। इसी वजह से महाविकास अघाड़ी में शामिल कांग्रेस ने उद्धव सेना और शरद पवार वाली एनसीपी के सामने ज्यादा डिमांड नहीं की। पहले माना जा रहा था कि सबसे ज्यादा सीटों पर कांग्रेस और फिर उद्धव सेना और तीसरे पर शरद पवार की पार्टी लड़ सकती है, लेकिन बीते दिन साफ हो गया कि तीनों दल 85-85-85 सीटों पर ही चुनाव लड़ेंगे। बाकी की 18 सीटों को गठबंधन के दलों को दिया जाएगा, जबकि 15 सीटों पर बातचीत जारी है।

बाबा सिद्दीकी के शूटर के लिए बना था मास्टरप्लान

● नकली पासपोर्ट पर देश से भगाने की थी मंशा, कोशिश हुई नाकाम

मुंबई (एजेंसी)। बाबा सिद्दीकी के शूटर्स में से एक को देश से बाहर भागने के लिए नकली पासपोर्ट देने का वादा किया गया था। इस बात का खुलासा पुलिस ने किया है। इसके मुताबिक हत्या के मास्टरमाइंड ने एक शूटर से कहा था कि वह नकली कागजात के आधार पर उसके लिए पासपोर्ट बनवा देगा। इसके आधार पर देश छोड़कर बाहर भाग सकेगा। इसके अलावा 23 साल के शूटर गुरमैल सिंह को 50 हजार रुपए भी दिए गए थे। गुरमैल हरियाणा के कैथल का रहने वाला है। अधिकारियों ने बताया कि उसके खिलाफ साल 2019 में भी हत्या का केस दर्ज हो चुका है। पुलिस के मुताबिक गुरमैल को डर था कि बाबा सिद्दीकी की हत्या करने के बाद उसे सजा हो जाएगी। टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक ऐसे में वह देश से बाहर भागना चाहता था। गौरतलब है कि गुरमैल सिंह और धर्मराज सिंह को पुलिस ने घटना के बाद गिरफ्तार कर लिया था।

कश्मीर में नई सरकार बनते ही और बिगड़े हालात!

15 दिन में आतंकियों ने की 19 की टारगेट किलिंग

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर को 10 साल बाद चुनी हुई सरकार मिली है और उमर अब्दुल्ला अब मुख्यमंत्री बन गए हैं। इसके बाद भी केंद्र शासित प्रदेश में आतंकी हमले थमने की बजाय और बढ़ गए हैं। बीते 15 दिनों में ही अलग-अलग आतंकी हमलों में अब तक 19 लोग मारे जा चुके हैं। 24 अक्टूबर की शाम को कश्मीर के गुलमर्ग में फिर एक आतकी हमला हुआ, जिसमें दो आर्मी पोर्टर और दो जवान शहीद हो गए। यह हमला भी टूरिस्ट हॉटस्पॉट वाले इलाके में हुआ। यही नहीं यहां सेना की बड़ी संख्या में तैनाती रहती है। उसके बाद भी आतंकियों के सेना तक पहुंचने और उनको निशाना बनाने से सवाल उठ रहे हैं। इससे पहले 20 अक्टूबर को गांदरबल जिले के गगनगीर इलाके में एक सुरंग के निर्माण की साइट पर आतंकी हमला हुआ था। इस हमले में 6 बाहरी मजदूरों और एक स्थानीय डॉक्टर का कत्ल कर दिया गया। इन लोगों पर आतंकियों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसाईं और ज्यादातर लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। इससे

पूर्व 18 तारीख को भी शोपियां में बिहार के एक मजदूर का कत्ल कर दिया गया था। इन घटनाओं के बीच एलजी मनोज सिन्हा ने सुरक्षा बलों को सख्ती बरतने और पुलिस एवं सेना को साथ मिलकर अभियान चलाने का आदेश दिया है। फिर भी अब तक कोई नियंत्रण नहीं दिख रहा है। बीती रात को सेना और आतंकियों के बीच छिड़े संघर्ष ने चिंताओं को और बढ़ा दिया है। बारामूला, पुंछ, शोपियां, गांदरबल और कश्मीर समेत ज्यादातर इलाकों में सुरक्षा बलों की चिंता बढ़ गई है। फिलहाल ज्यादातर जगहों पर सुरक्षा बल सर्च ऑपरेशन चला रहे हैं।

महाकाल मंदिर में मशीन से 24 घंटे मिलेगा लड्डू प्रसाद

देश का पहला मंदिर जहां मशीन में QR कोड स्कैन करने पर निकलेगा लड्डू प्रसाद

उज्जैन (नप्र)। देशभर में प्रसिद्ध बाबा महाकाल की लड्डू प्रसादी अब श्रद्धालुओं को 24 घंटे मिल सकेगी। इसके लिए महाकाल मंदिर में एटीएम जैसी मशीन लगाई जा रही है, जिसमें QR कोड स्कैन करते ही या कैश डालते ही लड्डू प्रसादी का पैकेट मशीन से बाहर निकलेगा। फिलहाल, प्रायोगिक रूप से शुरुआत में दो मशीनें मंगवाई गई हैं, जो जल्द ही काम करना शुरू कर देंगी। यह हाईटेक सुविधा देश के किसी भी अन्य मंदिर में उपलब्ध नहीं है।

महाकाल मंदिर के प्रशासक गणेश धाकड़ ने बताया कि भोपाल के एक दानदाता ने शुरुआत में दो मशीनें मंदिर में दान देने की बात कही थी। इसके बाद कोयम्बटूर की 5 प्रतिशत टेक्नोलॉजी नामक कंपनी को लड्डू प्रसादी पैकेट की ऑटोमैटिक मशीन का ऑर्डर दिया गया। ये मशीन अब बनकर तैयार है। दो-तीन दिनों में एक मशीन उज्जैन पहुंच सकती है, जिसे मंदिर क्षेत्र में इंस्टॉल किया जाएगा।

एटीएम मशीन की तरह करेगी काम

मंदिर में लगने वाली मशीन एटीएम की तरह काम करेगी। श्रद्धालुओं को प्रसाद के लिए कतार में नहीं लगना पड़ेगा। प्रसादी पैकेट निकालने के लिए QR कोड स्कैन का विकल्प होगा। श्रद्धालु मोबाइल से ही पेमेंट कर 24 घंटे लड्डू प्रसादी प्राप्त कर सकेंगे।

150 पैकेट एक बार में रखे जा सकेंगे- प्रशासक गणेश धाकड़ ने बताया कि मशीन आने के बाद इसे बैंक से कनेक्ट किया जाएगा। इसमें 100 ग्राम से लेकर 500 ग्राम तक के पैकेट रखे जाएंगे। जो मशीन बन रही है, उसमें 150 पैकेट एक बार में रखने की क्षमता होगी। इसके बाद मशीन को दोबारा रिफिल करना पड़ेगा। दूसरी मशीन आगामी 15 दिनों के भीतर आएगी।

शॉटगन से काले हिरण का शिकार, आर-पार हो गई गोली

भोपाल में पीएम रिपोर्ट में खुलासा, शिकारियों की तलाश, पुलिस की मदद लेगा वन विभाग

भोपाल (नप्र)। भोपाल से 40 किलोमीटर दूर बरखेड़ा सालम में ब्लैक बक यानी काले हिरण का शॉट गन से गोली मारकर शिकार किया गया था। गर्दन के नीचे गोली आर-पार हो गई थी। इसका खुलासा पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में हुआ है। इधर, वन विभाग शिकारियों की तलाश में जुटा है। कई संदिग्धों से पूछताछ की जा चुकी है। वहीं, वन विभाग पुलिस की भी मदद लेगा। शुक्रवार को अब तक की जांच की रिपोर्ट भी डीएफओ ने मंगाई है। 23 अक्टूबर, मंगलवार को बरखेड़ा सालम

में काले हिरण का 15 से 20 घंटे पुराना शव एक खेत में पड़ा मिला था। जेल पहाड़ी स्थित पशु चिकित्सालय में डॉ. संगीता धमीजा ने शव का पोस्टमॉर्टम किया था। इसके बाद वन विभाग ने शव का दाह संस्कार किया। हिरण की गर्दन के पास गहरा घाव था। इसके अलावा शरीर में कहीं भी चोट के निशान नहीं थे। इसी दिन वन विभाग ने शिकार की पुष्टि करते हुए अज्ञात शिकारी पर केस दर्ज किया था। डॉ. धमीजा ने पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट भी दे दी है। इसमें स्पष्ट हो गया कि काले हिरण का शिकार गोली मारकर किया गया था।

जिस जगह शिकार, वन खुला क्षेत्र- डीएफओ लोकप्रिय भारती ने बताया कि जिस जगह काले हिरण का शिकार हुआ, वन खुला क्षेत्र है। आमतौर पर काले हिरण खुले इलाकों में ही विचरण करते हैं। यही वजह है कि शिकारियों को शिकार करने का मौका मिल गया।

वन विभाग ने गश्त बढ़ाई

शिकार के मामले के बाद वन विभाग ने गश्त बढ़ा दी है। खासकर उन जगहों पर 24 घंटे गश्त की जा रही है, जहां काले हिरणों का मूवमेंट रहता है।

7 महीने में 4 हिरणों का हो चुका शिकार- पिछले 7 महीने में ही भोपाल में 4 हिरणों का शिकार हो चुका है। इससे पहले बिशनखेड़ी स्थित भोज वेटलैंड में कुत्तों ने 5 महीने पहले जहां काले हिरण को नोंचा था, उसके 200 मीटर के दायरे में 2 महीने के अंदर 2 और हिरणों का शिकार हुआ था यानी, इस जगह पर 3 हिरणों का शिकार हो चुका है। बावजूद शिकार रोकने के प्रयास नहीं हुए और न ही कुत्तों को खदेड़ा जा सका। जिस जगह हिरण का शव मिला, उसके पास ही शराब, कोल्ड ड्रिंक्स की बोतलें और नमकीन के रैपर भी मिले थे। इसके बाद एक और मामला सामने आया था। हालांकि, इसमें भी कोई कार्रवाई नहीं हुई।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय में संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस का आयोजन

भोपाल(नप्र)। शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल में आज संयुक्त राष्ट्र एवं वायु सेना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स के साथ-साथ महाविद्यालय के अन्य छात्र भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ की संयोजक डॉ. आशा वर्मा एवं एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. देवेंद्र सिंह पटेल के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए प्रभारी प्राचार्य डॉ. रागिनी तिवारी ने संयुक्त राष्ट्र संघ की वैश्विक संदर्भों में भूमिका पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय से वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ वी पी एस गौर ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य दिया।

समारोह के दौरान छात्रों ने संयुक्त राष्ट्र के स्थापना उद्देश्यों, आदर्शों एवम भूमिका विभिन्न 6 अंगों विशेषकर सुरक्षा परिषद के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। साथ ही, भारतीय वायु सेना के इतिहास एवं उपलब्धियों के बारे में भी चर्चा की गई। छात्रों ने वायु सेना के विभिन्न विमानों एवं हथियारों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ। कार्यक्रम के आयोजन में महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों डॉ कल्पना दवे, डॉ अनीता मंडलोई, डॉ आशा वाधवानी, डॉ मीनाक्षी सक्सेना, डॉ रुचि सोनी, डॉ हेमलता वर्मा, डॉ ज्योति पंथी, डॉ सरताज पर्रे एवं अन्य का विशेष योगदान रहा।

भाजपा के स्टार प्रचारकों में सुरेश पचौरी को जगह नहीं

उप नेता प्रतिपक्ष कटारे का तंज; बोले- बीजेपी में जाना 4 दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात जैसा

भोपाल (नप्र)। बुधनी और विजयपुर सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए बीजेपी ने स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। 40 स्टार प्रचारकों में सीएम डॉ. मोहन यादव, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ विजयपुर के पूर्व बीजेपी विधायक और सहरिया विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष सीताराम आदिवासी को स्टार प्रचारक बनाया गया है। इधर, कांग्रेस के स्टार प्रचारकों की सूची में राजस्थान के नेताओं को जगह मिली है।

पचौरी को स्टार प्रचारकों में जगह नहीं- लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी को बुधनी-विजयपुर उपचुनाव के स्टार प्रचारकों में जगह नहीं मिल पाई है। पचौरी लोकसभा चुनाव में बीजेपी के स्टार प्रचारक बनाए गए थे। उन्होंने कई सीटों पर जाकर प्रचार भी किया था।

बीजेपी में जाना केवल 4 दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात जैसा- बीजेपी के स्टार प्रचारकों में पचौरी को जगह नहीं मिलने पर उप नेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने तंज कसा। कटारे ने एक्स पर लिखा- जो सुरेश पचौरी कांग्रेस में लोगों को टिकट दिलाने का माद्दा रखते थे, जो स्टार प्रचारक तो थे ही, साथ में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी थे। वे बीजेपी में जाकर लुप्त हो गए हैं।

बीजेपी ने सुरेश पचौरी को स्टार प्रचारक तक नहीं बनाया, बल्कि उनके जूनियर तक का नाम लिस्ट में है। यह दिखाता है कि बीजेपी में बाहर से आए नेताओं की कद्र ज्यादा दिन नहीं रहती। बीजेपी में जाना केवल 4 दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात जैसा है। 9 मार्च 2024 को पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए थे।

बीजेपी ने सीताराम को बनाया स्टार प्रचारकबीजेपी ने विजयपुर सीट पर हो रहे उपचुनाव में सहरिया वोटर्स को साधने के लिए पूर्व विधायक और सहरिया विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष सीताराम आदिवासी को स्टार प्रचारक बनाया है। इसके अलावा बुधनी विधानसभा सीट से टिकट के दावेदारों में शामिल रहीं निर्मला बारेला को भी स्टार कैम्पेनर बनाया गया है।

उपचुनाव के लिए बीजेपी के 40 स्टार कैम्पेनर- बीजेपी के स्टार प्रचारकों की सूची में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश, केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार खटीक, ज्योतिरादित्य सिंधिया, संसदीय बोर्ड के सदस्य सत्यनारायण जटिया, प्रदेश प्रभारी महेंद्र सिंह, सह प्रभारी सतीश उपाध्याय, डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा, राजेंद्र शुक्ला क्षेत्रीय संगठन मंत्री अजय जमवाल, पंचायत मंत्री प्रहलाद पटेल, नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह को स्टार प्रचारक बनाया गया है।

128 लाख से अधिक पात्र परिवारों को उचित मूल्य दुकानों से खाद्यान्न वितरण : खाद्य मंत्री

गेहूँ और चावल का आवंटन 60:40 के अनुपात में

भोपाल (नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया है कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत सम्मिलित एक करोड़ 28 लाख 86 हजार पात्र परिवारों को लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत संचालित उचित मूल्य दुकानों के माध्यम से खाद्यान्न का वितरण किया जा रहा है। इसमें अंत्योदय श्रेणी एवं

प्राथमिकता श्रेणी के पात्र परिवारों को गेंहू, चावल का प्रतिमाह वितरण किया जाता है। माह अक्टूबर 2024 से गेंहू एवं चावल के अनुपात में परिवर्तन कर हितग्राहियों को खाद्यान्न वितरण कराया गया है। जिलों को माह नवम्बर 2024 के लिये खाद्यान्न का आवंटन जारी कर दिया गया है। पूर्व में प्रदेश को केन्द्र सरकार से गेहूं एवं चावल 40:60 के अनुपात में प्राप्त हो रहा था। वर्तमान में गेहूँ एवं चावल का आवंटन 60:40 अनुपात से प्राप्त हो रहा है। इसी अनुपात में सार्वजनिक वितरण प्रणाली अंतर्गत उचित मूल्य दुकानों से पीओएस मशीन के माध्यम से पात्र श्रेणियों के हितग्राहियों को खाद्यान्न वितरित भी किया जा रहा है। अंत्योदय श्रेणी के पात्र परिवार को 35 किग्रा (गेंहू एवं चावल) तथा प्राथमिकता श्रेणी के परिवार को प्रति सदस्य, 5 किग्रा के मान से गेहूँ एवं चावल का वितरण किया जा रहा है।

अंत्योदय श्रेणी में जिले

आगर-मालवा, अलीराजपुर, बडवानी, भोपाल, बुरहानपुर, छतरपुर, दमोह, देवास, धार, इंदौर, झाबुआ, खण्डवा, खरगौन, मंदसौर, नीमच, निवाड़ी, पन्ना, रायसेन, राजगढ़, रतलाम, सागर, सीहोर, शाजापुर, टीकमगढ़, उज्जैन, विदिशा जिलों में 24 किलोग्राम गेहूँ और 11 किलोग्राम चावल, अशोकनगर, बैतूल, भिंड, दतिया, गुना, ग्वालियर, हरदा, मैहर, मउगंज, मुरैना, नर्मदापुरम, रीवा, सतना, शिवपुरी, सीधी, सिंगरौली जिलों में 21 किलोग्राम गेहूँ और 14 किलोग्राम चावल, श्योपुर में 22 किलोग्राम गेहूँ और 13 किलोग्राम चावल, डिंडोरी, मंडला, सिवनी में 15 किलोग्राम गेहूँ और 20 किलोग्राम चावल, छिंदवाडा, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, पांढुर्णा में 20 किलोग्राम गेहूँ और 15 किलोग्राम चावल, अनूपपुर, बालाघाट, शहडोल, उमरिया में 14 किलोग्राम गेहूँ और 21 किलोग्राम चावल के अनुपात में वितरण किया जायेगा।

प्राथमिकता श्रेणी अंतर्गत जिले

अलीराजपुर, बडवानी, भोपाल, बुरहानपुर, छतरपुर, दमोह, धार, इंदौर, झाबुआ, खण्डवा, खरगौन, निवाडी, पन्ना, रायसेन, राजगढ, सागर, सीहोर, टीकमगढ, विदिशा, अशोकनगर, बैतूल, भिंड, दतिया, गुना, ग्वालियर, हरदा, मैहर, मउगंज, मुरैना, नर्मदापुरम, रीवा, सतना, शिवपुरी, सीधी, सिंगरौली, श्योपुर, छिंदवाडा, जबलपुर, नरसिंहपुर, पांढुर्णा जिलों में 03 किलोग्राम गेहूँ और 02 किलोग्राम चावल, आगर-मालवा, देवास, मंदसौर, नीमच, रतलाम, शाजापुर, उज्जैन, में 04 किलोग्राम गेहूँ और 01 किलोग्राम चावल, अनूपपुर, बालाघाट, डिंडोरी, कटनी, मंडला, सिवनी, शहडोल, उमारिया, में 02 किलोग्राम गेहूँ और 03 किलोग्राम चावल के अनुपात में वितरण किया जायेगा।

दिव्यांगजन के लिये 'मुख्यमंत्री निःशक्तजन शिक्षा प्रोत्साहन योजना' को किया गया ऑनलाइन : मंत्री श्री कुशवाह

स्पर्श पोर्टल के माध्यम से कर सकते हैं आवेदन

भोपाल(नप्र)। सामाजिक न्याय दिव्यांगजन कल्याण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा कि राज्य सरकार दिव्यांगजन की शिक्षा में बाधाओं को कम करने और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिये प्रतिबद्ध है। इसी कड़ी में सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण विभाग द्वारा 'मुख्यमंत्री निःशक्त शिक्षा प्रोत्साहन योजना' का संचालन किया जा रहा है। विभाग द्वारा दिव्यांगजन को सुविधा की दृष्टि आवेदन प्रक्रिया को 'स्पर्श पोर्टल' के माध्यम से ऑनलाइन कर दिया गया है। दिव्यांगजन 31 अक्टूबर 2024 तक पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते है। आयुक्त सामाजिक न्याय डॉ. आर.आर. भौसले ने बताया कि दिव्यांगजन को शिक्षा और तकनीकी की सहायता से सशक्त बनाना है। इसी उद्देश्य से विभाग के द्वारा मुख्यमंत्री निःशक्त शिक्षा प्रोत्साहन योजना की क्रियान्वयन प्रक्रिया को ऑनलाइन किया गया है। इसके तहत एनआईसी म.प्र. के सहयोग से स्पर्श पोर्टल पर नई प्रणाली विकसित की गई है। छात्र 31 अक्टूबर 2024 तक आवेदन कर सकते हैं और 15 नवंबर तक इन आवेदनों की समीक्षा की जाएगी।

महामंडलेश्वर बोले-देश छोड़कर निकल जाएं आईएएस मार्टिन

शैलबाला का जवाब-मैं इस देश की माटी में ही दफन होऊंगी, ऐसा कहने वाले संविधान विरोधी

भोपाल (नप्र)। मंदिर में बजने वाले लाउड स्पीकर पर एमपी कैडर की आईएएस और सामान्य प्रशासन विभाग की अपर सचिव शैलबाला मार्टिन की टिप्पणी पर विवाद और गहराता जा रहा है। उनकी टिप्पणी पर अब महा मंडलेश्वर अनिलानंद ने कहा है कि अगर मार्टिन को लाउड स्पीकर से इतनी ही दिक्कत है तो उन्हें इस देश से निकल जाना चाहिए।

अनिलानंद के वीडियो पर आईएएस मार्टिन ने एक्स पर पलटवार करते हुए लिखा है-आप मुझे देश निकाला नहीं दे सकते महा मंडलेश्वर जी, इस देश की माटी में ही दफन होऊंगी।

आईएएस अफसर मार्टिन ने एक्स पर लिखा है कि लाउड स्पीकर और डीजे का प्रश्न उठाने पर महा मंडलेश्वर अनिलानंद महाराज ने मुझे देश छोड़ कर चले जाने को कहा है। कुछ और सुधी जन भी मेरे चार लाइन के ट्वीट पर मुझे देश निकाला दे रहे हैं। जब तक कुछ अगंभीर लोग (ट्रोल्स) धमकी दे रहे थे तब तक उत्तर देना आवश्यक नहीं लगा। लेकिन अब महा मंडलेश्वर जैसे विद्वान ने मुझे देश से चले जाने की धमकी दी है तब लगा कि कुछ उत्तर दिया जाए। मार्टिन ने लिखा है कि यद्यपि श्रद्धेय महा मंडलेश्वर ने मेरी 'शारीरिक और मानसिक बनावट' पर भी टिप्पणी की है। लेकिन उस पर मुझे कुछ नहीं कहना। इसके लिए उन्होंने वीडियो की लिंक भी एक्स पर अपलोड की है। आईएएस शैलबाला मार्टिन ने महा मंडलेश्वर अनिलानंद के बयान के बाद एक्स पर पोस्ट की है।

मर्टिन ने वरिष्ठ पत्रकार डॉ. मुकेश कुमार के ट्वीट को किया था रिट्वीट- मार्टिन ने लिखा- मामला यह है कि वरिष्ठ पत्रकार डॉ. मुकेश कुमार के ट्वीट के इस हिस्से पर मेरा रिट्वीट आधारित था। तर्क ये दिया जा रहा है कि मस्जिदों से लाउड स्पीकर से अज़ान की आवाजें जब लोगों को डिस्टर्ब करती हैं तो मंदिरों के सामने डीजे बजाने से परेशानी क्यों होना चाहिए?

स्वाभाविक ही है कि जब मुकेश कुमार का ट्वीट मस्जिदों के लाउडस्पीकर से एक वर्ग विशेष की आपत्ति पर था तो सहज रूप से मैंने ये चार लाइन लिख कर मंदिरों के लाउड स्पीकर की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने लिखा- मेरे शब्द ये रहे...और मंदिरों पर लगे लाउडस्पीकर,जो कई-कई गलियों में दूर तक स्पीकर्स के माध्यम से ध्वनि प्रदूषण फैलाते हैं, जो आधी-आधी रात तक बजते हैं, उनसे किसी को डिस्टरबेंस नहीं होता.?

मार्टिन ने लिखा है कि उनके ट्वीट के मूल भाव को न समझते हुए कुछ लोगों ने आपत्ति की। सहज शालीन भाषा में आपत्ति और असहमति का स्वागत है लेकिन बात गालियों से होते हुए मेरे देश निकाले की धमकी तक पहुंच गई है। मैं आप सबको बताना चाहती हूं कि मैंने अपने संवैधानिक अधिकारों के तहत ही अन्य धार्मिक स्थलों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण की ओर ध्यान आकर्षित किया था। किसी भी प्रकार का प्रदूषण चाहे किसी भी व्यक्ति, समाज या धार्मिक स्थल, संगठन द्वारा फैलाया जा रहा हो, न केवल पर्यावरण के लिए अपितु स्वास्थ्य के लिए भी सर्वाधिक घातक है। इसीलिए देश में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड बनाए गए हैं।

एक सीमा से ज्यादा शोर किसी के हित में नहीं, सर्वधर्म समभाव में मेरा विश्वास। आईएएस शैलबाला ने लिखा है कि मेरा अब भी यही अभिमत है कि चाहे मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा हो या अन्य कोई सार्वजनिक स्थान एक सीमा से अधिक शोर किसी के भी हित में नहीं है। मेरे विचार किसी भी तौर पर किसी धर्म विशेष के प्रति आग्रह, दुराग्रह से प्रेरित नहीं हैं बल्कि मैं सर्वधर्म समभाव में विश्वास करती हूं।

घर की पुताई के बाद युवक ने किया सुसाइड

आधी रात मासूम ने पिता को फंदे पर लटका देख मां को बताया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के भीम नगर इलाके में गुरुवार रात एक युवक ने सुसाइड कर लिया। घटना से पहले उसने देर रात तक घर की पुताई की। इस बीच पत्नी और दोनों मासूम बच्चे सो चुके थे। आधी रात सात साल के बेटे की नींद खुली। उसने पिता का शव शेड के पाइप में लटके देखा। तत्काल मामले की जानकारी मां को दी। मां ने शोर मचाया और पड़ोसियों की मदद से शव को फंदे से उतारा। पड़ोसियों की सूचना पर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक, अरविंद कुमार प्रजापति (35) निवासी भीम नगर थाना अरेरा हिल्स क्षेत्र का रहने वाला था। वह लोडिंग वाहन का चालक था। उसके भाई सुनील प्रजापति ने बताया कि काम से लौटने के बाद गुरुवार रात को भाई ने घर की सफाई की। दिवाली के चलते वह घर की पेंटिंग भी स्वयं कर रहा था। रात करीब 11:30 बजे तक उसकी बेटी-बेटा और पत्नी तीनों एक

कमरे में सो गए। देर रात 1 बजे बेटे की नींद खुली। वह देखने गया कि पिता ने कितनी पुताई कर ली। तब बेटे ने पिता का शव सफेद रंग के गमछे से लटकता था। उसने तत्काल मां को उठाया, मां ने शोर मचाकर पड़ोसियों से मदद मांगी। तब लोगों ने घर में आकर शव को फंदे से उतारा और पुलिस को सूचना दी।

मृतक का मोबाइल फोन जब्त

सूचना के बाद स्पॉट पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लिया। कमरे की तलाशी में पुलिस को फिलहाल कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस ने मृतक का मोबाइल फोन जब्त कर लिया है। परिजनों ने भी आत्महत्या के संबंध में जानकारी होने की बात से इनकार कर दिया है।

पुलिस मृतक के मोबाइल की सीडीआर खंगालेगी। एएसआई छोटेलाल ने बताया कि मृतक के परिजनों के डिटेल बयान अभी दर्ज नहीं किए जा सके हैं।

आधी रात 7 पुलिस अधिकारियों के तबादले

सागर, रीवा और ग्वालियर के ईओडब्ल्यू एसपी बदले

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन ने सागर, रीवा और ग्वालियर के ईओडब्ल्यू एसपी के तबादले किए हैं। राज्य पुलिस सेवा के सात अधिकारियों के तबादले गुरुवार रात 12 बजे किए गए हैं। एसपी, पीटीएस (सागर) दिनेश कुमार कौशल को जोनल पुलिस अधीक्षक, विशेष शाखा, रीवा भेजा गया है। एसपी, साइबर (इंदौर) जितेंद्र सिंह को एसपी, एटीएस (इंदौर) बनाया गया। एसपी, विपुस्था, लोकायुक्त संगठन (रीवा) गोपाल सिंह धाकड़ को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुरैना), जबकि मौजूदा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुरैना) अरविंद सिंह ठाकुर को एसपी, ईओडब्लू (रीवा) की जिम्मेदारी दी गई है। एसपी, ईओडब्लू (ग्वालियर) बिट्टू सहगल को उप सेनानी, 13वीं वाहिनी विसबल, ग्वालियर, सहायक पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस मुख्यालय (भोपाल) दिलीप सिंह तोमर को एसपी, ईओडब्लू (ग्वालियर), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, नक्सल ऑपरेशन (बालाघाट) देवेंद्र कुमार यादव को एसपी ईओडब्लू (सागर) बनाया गया है।।

संपादकीय

गहरी साजिश है ये 'थ्रेट गेम'

बीते करीब 15 दिनों से भारतीय यात्री विमानों को बम से उड़ा देने की 250 से ज्यादा धमकियां किसी गहरी साजिश की ओर इशारा करती हैं। पहले माना जा रहा था कि यह किसी मनचले या विघ्न संतोषी की हरकत है, लेकिन अब लगता है कि इसके पीछे कोई सुनियोजित षड्यंत्र है, जिसका उद्देश्य भारत में विमान यात्रियों के बीच खौफ पैदा करना और भारतीय अर्थव्यवस्था को गहरी चोट पहुंचाना है। चिंता की बात यह भी है कि अभी तक हमारी जांच और खुफिया एजेंसियां इस साजिश की तह तक नहीं पहुंच पाई हैं कि यह कौन करवा रहा है। बीते गुरुवार को 95 भारतीय फ्लाइटों को धमकी मिली, जिससे नेशनल एविएशन इंडस्ट्री में बड़ी वित्तीय और सुरक्षा चिंताएँ और बढ़ गई हैं। धमकी भरी इन कॉल्स और मैसेज से लोगों में डर का माहौल बनता जा रहा है। इस 'थ्रेट गेम' से इस साल अभी तक 500 से अधिक फ्लाइटों को धमकी मिल चुकी है। इसका असर तकरीबन दो हजार फ्लाइटों और 3.5 लाख यात्रियों पर पड़ा है। हालांकि अभी तक दी गई सभी धमकियां फर्जी पाई गई हैं, लेकिन यात्रियों और क्रू मेंबरों में इस बात को लेकर दहशत है कि न जाने कब कौन सी धमकी सही साबित हो जाए और लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ जाए। आम लोगों की भावना यही है कि सरकार इस पूरे मामले को बेहद गंभीरता से ले और सघन जांच कर तह में जाकर पता लगाए कि इन सबके पीछे किसका हाथ है। इस थ्रेट गेम का सर्वाधिक शिकार अकासा, एयर इंडिया, इंडिगो, स्पाइसजेट, विस्तारा और एलायंस एयर की उड़ानें हो रही हैं। अधिकतर धमकियां सोशल मीडिया हैंडल एक्स और ईमेल के जरिए दी गई। इनमें से एक अकाउंट कुछ देर पहले बनाया गया और फिर धमकी देने के कुछ देर बाद उसे डिलीट कर दिया गया। जांच एजेंसियों का कहना है कि उनकी तरफ से गूगल, एक्स और मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध कराने वाली कंपनियों से डिटेल जानकारियां मांगी गई हैं। कुछ जानकारियां मिल भी चुकी हैं, लेकिन धमकी देने के लिए जो वीपीएन का इस्तेमाल किया जा रहा है, उस 'खुफिया टनल' की चेन का पता लगाने में थोड़ा वक्त लग रहा है। इस बारे में केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू का कहना है कि सरकार इस मामले में सख्त कार्रवाई करने जा रही है। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए विमान सुरक्षा नियमों और नागरिक उड्डयन अधिनियम में संशोधन किया जा रहा है। उनका यह भी कहना है कि चिंता की कोई बात नहीं है। स्थिति नियंत्रण में है। एक सुझाव धमकी देने वाले व्यक्ति को नो फ्लाइंग जोन में डालने का भी है। उन्होंने कहा कि मामले की जांच पूरी होने दीजिए। इस बारे में जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं लिया जा सकता। अभी यह भी कहना कठिन है कि इन धमकियों के पीछे कोई साजिश है या फिर शरारत। यह त्यौहारों के मौसम में भारतीय विमान उद्योग को नुकसान पहुंचाने के इरादे से किया गया भी हो सकता है। नायडू जो कह रहे हैं, वह लंबी कानूनी प्रक्रिया है। लोगों की दिलचस्पी इस बात में है कि सरकार तत्काल क्या कदम उठा रही है। क्योंकि ऐसी धमकियों के कारण टेक ऑफ किए विमान को जबरिया नीचे उतारना पड़ता है या फिर ऐसे विमान काफी समय तक उड़ ही नहीं पाते हैं। क्योंकि विमान की सघन जांच होनी होती है। इसका खमियाजा यात्रियों को भुगतना होता है। विमान कंपनी को भारी आर्थिक होती है, सो अलग। विमान कंपनियों को बचाने के लिए जरूरी है कि सरकार तुरंत इस मामले में गंभीरता से कार्रवाई करे और विमान उद्योग की विश्वसनीयता बहाल करे।

धर्मनिरपेक्षता पर सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के निहितार्थ

नजरिया

ललित गर्ग

लेखक पत्रकार हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने दो हालिया फैसलों में धर्मनिरपेक्षता की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसे और मजबूती दी है। असल में धर्मनिरपेक्षता को लेकर संविधान-निर्माताओं का मुख्य उद्देश्य धार्मिक सहिष्णुता, समानता एवं बंधुत्व भाव से था, लेकिन बाद में यह शब्द भ्रामक हो गया और इसने धर्म के अस्तित्व को ही नकार दिया। राजनेताओं ने अपने-अपने हितों को साधने के लिये इस धर्मनिरपेक्षता शब्द के वास्तविक अर्थ एवं भावना को ही धुंधला दिया। सर्वोच्च अदालत ने बीते सोमवार को संविधान के 42वें संशोधन को चुनौती देने वाली याचिकाओं के बाबत धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान की आधारभूत संरचना का हिस्सा बताया और स्पष्ट संकेत दिया है कि धर्मनिरपेक्षता को पश्चिमी देशों से आयातित शब्द के नजरिये से देखने के बजाय भारतीय संविधान की आत्मा के रूप में देखना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान की मूल विशेषता बताते हुए कोर्ट ने कहा कि संविधान में वर्णित समानता व बंधुत्व शब्द इसी भावना के आलोक में वर्णित हैं। साथ ही धर्मनिरपेक्षता को भारतीय लोकतंत्र की अपरिहार्य विशेषता बताते हुए कहा कि यह समाज में व्यापक दृष्टि वाली उदार सोच को विकसित करने में सहायक है। जिसके बिना स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। जो राष्ट्रीय एकता का भी आवश्यक अंग है।

ज्ञातव्य है कि 42वें संविधान संशोधन के बाद भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 'पंथनिरपेक्ष' शब्द जोड़ा गया, लेकिन 'पन्थनिरपेक्ष' शब्द का प्रयोग भारतीय संविधान के किसी अन्य भाग में नहीं किया गया है। वैसे संविधान में कई ऐसे अनुच्छेद मौजूद हैं जिनके आधार पर भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य कहा जाता है क्योंकि भारत का संविधान देश के नागरिकों को यह विश्वास दिलाता है कि उनके साथ धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा। संविधान में भारतीय राज्य का कोई धर्म घोषित नहीं किया गया है और न ही किसी खास धर्म का समर्थन किया गया है। इसका कारण भारत में अनेकों धर्म और सम्प्रदाय प्रचलित हैं। अतः संविधान निर्माताओं ने इसको धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में स्वीकार किया। भारतीय समाज का बहुधर्मी व विभिन्न संस्कृतियों का गुलदस्ता होना भी इसकी अपरिहार्यता को दर्शाता है। निश्चित रूप से अदालत ने इस मुद्दे पर अपनी राजनीतिक सुविधा के लिये तल्खी दिखाने वाले नेताओं को भी आईना दिखाया है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन् ने धर्म निरपेक्षता शब्द के व्यापक हार्द को स्पष्ट करते हुए कहा था- 'धर्मनिरपेक्ष होने का अर्थ अधर्मी होना अथवा संकुचित धार्मिकता पर चलना नहीं होता, वरन इसका अर्थ पूर्णतः आध्यात्मिक होना होता है। निरपेक्ष का अर्थ है कि राष्ट्र की ओर से किसी धर्म विशेष का प्रचार-प्रसार नहीं किया जाएगा। सब धर्मों के प्रति समानता का व्यवहार किया जाएगा।' भारत के लोकतंत्र एवं संविधान की यही विशेषता है कि इसमें किसी एक धर्म को मान्यता न देकर सभी धर्मों को समान नजर से देखा जाता है।

आजकल धर्मनिरपेक्षता को लेकर चलने वाली बहसें अक्सर जिस तरह का तीखा रूप ले लेती हैं, उसके मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट के अलग-अलग इन दो फैसलों में इसकी अहमियत रेखांकित हुई है। एक मामले में सर्वोच्च अदालत ने धर्मनिरपेक्षता को संविधान के मूल ढांचे का हिस्सा करार दिया तो दूसरे मामले में इसकी संकीर्ण व्याख्या से उपजी गड़बड़ियां दुरुस्त कीं। दूसरा मामला इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा यूपी बोर्ड ऑफ मदरसा एजुकेशन एक्ट 2004 को रद्द किए जाने से जुड़ा था, जिसे मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने गलत करार दिया। हाईकोर्ट ने इस एक्ट को धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के खिलाफ माना था। धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत की इस संकीर्ण व्याख्या के चलते प्रदेश के 13 हजार से ज्यादा मदरसों में पढ़ रहे 12 लाख से अधिक छात्रों के भविष्य पर अनिश्चितता के बादल मंडराने लगे थे। मगर सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जरूरत मदरसों को बैन करने की नहीं बल्कि उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने की है। लेकिन यहां एक प्रश्न यह भी है कि क्या मदरसे मुख्यधारा में आने को तैयार है? क्या मदरसे एक धर्म-विशेष से जुड़ा मामला नहीं है?

अदालत का यह मानना कि मदरसों पर रोक लगाने के बजाय उनके पाठ्यक्रम को वक्त की जरूरत और राष्ट्रीय सोच के अनुरूप ढाला जाना चाहिये, उचित एवं संविधान की मूल भावना के अनुरूप है। जिससे छात्रों की व्यापक दृष्टि विकसित हो सके। लेकिन क्या ऐसा संभव है? क्या मदरसे अपने पाठ्यक्रम को संकीर्ण दायरों से बाहर निकाल कर व्यापक परिवेश में नया रूप दे पायेंगे? ऐसा होता है तो अदालत की सोच से भारत की एकता एवं अखण्डता को नयी ऊर्जा मिलेगी। फिर तो अदालत का दो टूक कहना कि यदि किसी भी प्रकार से धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा कमजोर पड़ती है तो अंततः इसका नुकसान समाज व देश को ही उठाना पड़ेगा, सही है। भारतीय समाज में सदियों से फल-फूल रही गंगा-जमुनी संस्कृति के पोषण देने के लिये सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों को समानता से, बंधुत्व भावना से एवं उदारता से ही देखा जाना चाहिए।

आज धर्म-निरपेक्षता शब्द को लेकर राजनेता एवं राजनीति दो भागों में बंटी हुई है। समाज भी दो भागों मे बंटा है। आजादी के समय एवं संविधान को निर्मित करते हुए अंग्रेजी के सेक्युलर शब्द का अर्थ धर्म करना भ्रामक हो गया। तब के इसी धर्म-निरपेक्ष शब्द के कारण आज विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती, जिसका परिणाम यही है कि आज विद्यार्थियों का सर्वांगीण व्यक्तित्व-निर्माण नहीं हो रहा है। मैंने अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी के साथ विभिन्न राजनेताओं, धर्मगुरुओं, साहित्यकारों, पत्रकारों की इस शब्द को लेकर चर्चाओं में सहभागिता की। व्यापक सोच वाले आचार्य तुलसी का विश्वास रहा कि हिन्दुस्तान सम्प्रदाय निरपेक्ष होकर अपनी एकता को बनाए रख सकता है किन्तु धर्महीन होकर एकता को सुरक्षित नहीं रख सकता। लोकतंत्रीय राष्ट्र पर किसी सम्प्रदाय अथवा पंथ का आधिपत्य हो तो वह अपने लोकतंत्रीय स्वरूप को सुरक्षित नहीं रख सकता। इसलिए लोकतंत्रीय राष्ट्र का सम्प्रदाय अथवा पंथ-निरपेक्ष होना अनिवार्य है। साम्प्रदायिक कट्टरता में सहिष्णुता नहीं होती है अतः राजनीति किसी सम्प्रदाय विशेष की अवधारणा से संचालित नहीं होनी चाहिए। इसलिये संविधान में धर्मनिरपेक्ष के स्थान पर सम्प्रदाय-निरपेक्ष, मजहब-निरपेक्ष अथवा पंथ-निरपेक्ष शब्द का प्रयोग होना चाहिए। सम्प्रदाय निरपेक्ष होने का तात्पर्य धर्मनिरपेक्ष, धर्महीन या धर्मविरोधी होना नहीं हैं।'

इसी कारण धर्मनिरपेक्ष शब्द के कारण राजनैतिक दलों के अलग-अलग खेमे बन गए। इससे धर्म विशेष को लेकर पार्टी के द्वारा वोटों की राजनीति चलने लगी। इसीलिये आचार्य श्री तुलसी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और पी. वी. नरसिम्हाराव से इस संदर्भ में विस्तृत चर्चा करते हुए कहा- ''जब तक सेक्युलर शब्द का सही अर्थ नहीं होगा, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की समस्या नहीं सुलझ सकती।'' राजीव गांधी ने इस संदर्भ में नोट्स मांगे। उन्हें विस्तार से सारी बातें उपलब्ध कराई गई। कुछ समय बाद संविधान में सेक्युलर शब्द का अर्थ धर्मनिरपेक्ष बदलकर संप्रदायनिरपेक्ष कर दिया गया।' लेकिन संविधान में धर्मनिरपेक्षता शब्द के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गयी। इसीलिये संविधान के 42वें संशोधन को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया कि धर्मनिरपेक्षता संविधान के बुनियादी ढांचे का हिस्सा है। सर्वोच्च अदालत के फैसले से यह भी साफ हुआ कि संशोधन के द्वारा प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष शब्द जोड़े जाने का मतलब यह नहीं है कि इससे पहले धर्मनिरपेक्षता संविधान का अहम हिस्सा नहीं थी। चाहे समानता के अधिकार की बात हो या संविधान में आए बंधुत्व शब्द की या फिर इसके पार्ट 3 में दिए गए अधिकारों की, ये सब इस बात का साफ संकेत हैं कि धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की मूल विशेषता है। अदालत ने यह भी कहा कि चाहे धर्मनिरपेक्षता हो या समाजवाद, इन्हें पश्चिम के संदर्भ में देखने की जरूरत नहीं। भारतीय परिवेश ने इन शब्दों, मूल्यों, संकल्पनाओं, अवधारणाओं को काफी हद तक अपने अनुरूप ढाल लिया है। वैसे भारतीय समाज ने इस शब्द के मूल भाव का सहजता से अंगीकार किया भी है। यही वजह है कि कोर्ट ने धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान का मूल स्वर बताते हुए इसकी संकुचित व्याख्या करने से बचने के लिये हिदायत दी है।

क्या होगा इजरायल का अगला कदम

विश्व राजनीति

चेतनादित्य आलोक

लेखक पत्रकार हैं।

एक अक्टूबर को ईरान की तरफसे इजरायल पर 150 से भी ज्यादा बैलिस्टिक मिसाइलों से हमले किए जाने के बाद से ही यह कयास लगाए जा रहे थे कि इजरायली सेना (आईडीएफ) इसका बदला शीघ्र लेगी? गौरतलब है कि ईरान के मिसाइल हमलों के तुरंत बाद ही आईडीएफऔर पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा भी था कि ईरान को सही समय पर सही तरीके से जवाब दिया जाएगा और हाल के दिनों में इजरायल से जुड़ी मीडिया की कुछ खबरों से ये संकेत भी मिलने लगे थे कि इजरायल ने ईरान पर प्रतिशोधात्मक कार्रवाई करने की तैयारी पूरी कर लीहै।14-15 अक्टूबर को इससे संबद्ध आई खबरों के मुताबिक इजरायली सेना ने कथित तौर पर ईरान के उन ठिकानों की सूची भी तैयार कर ली थी, जिन पर वह तेहरान के बैलिस्टिक मिसाइल हमलों के जवाब में हमले करनाचाहता था। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट में यह दावा 'चैनल 12' न्यूज के हवाले से किया गया था। रिपोर्ट के अनुसार इजरायली सेना ने ईरान पर हमले की अपनी तैयारियों के बारे में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और रक्षा मंत्री योव गैलेंट को लक्ष्यों की एक सूची सौंपी थी। साथ ही उसने यह स्वीकार भी किया था कि आईडीएफ के लक्ष्य बिल्कुल साफ एवं स्पष्ट हैं और अब वह कभी भी जवाबी हमला कर सकता है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया था कि इजरायल ने ईरान पर हमले की योजना के बारे में अपने सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी अमेरिका को भी बता दिया है,लेकिन अमेरिका को हमले के विशिष्ट लक्ष्यों पर कोई अपडेट नहीं दिया है। रिपोर्ट में इसकी वजह ये बताई गई थी कि यह मुद्दा बेहद संवेदनशील होने के कारण इजरायल अंतिम समयमें भी अपना लक्ष्य बदल सकता है। इस मामले में आई ताजा खबरों के अनुसार इजरायल ईरानी परमाणु तथा ऊर्जा स्थलों पर हमले करने से बचेगा। ऐसा माना जाता है कि इजरायल ने अमेरिकी विरोध के बाद अपनी योजना बदल दी, अन्यथा पहले उसकी मंशा तेहरान में परमाणु साइट तथा ऊर्जा स्थलों और बुनियादी ढांचों पर हमला करने की थी। हालांकि इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू के कार्यालय की ओर से यह कहा गया है कि वे अमेरिका की सलाह तो सुनेंगे, लेकिन अंतिम निर्णयस्वयं करेंगे। इन सारी बातों को लेकर अभी दुनिया भर में ऊहापोह की स्थिति कायम थी। मीडिया कर्मियों, राजनीतिक विश्लेषकों, रक्षा विशेषज्ञों एवं मध्य-पूर्व से जुड़े मुद्दों पर राय रखने वाले तमाम विशेषज्ञों द्वारा तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे और तभी अचानक इजरायल कीईरान पर हमले की उसयोजना से जुड़ा दस्तावेज लीक हो गया, जिसके बाद दुनिया भर में इजरायल की बड़ी फजीहत हुई।

गौरतलब है कि लीक हुए दस्तावेज 15 एवं 16 अक्टूबर की तारीख वाले हैं, जिन पर 'टॉप सीक्रेट' की मुहर लगी हुई है।खबरों के अनुसार 18 अक्टूबर को मैसेजिंग प्लेटफॉर्म टेलीग्राम के 'मिडिल ईस्ट स्पेक्टेटर' नामक अकाउंट पर इन्हेंशेयर किया गया था। हालांकि इन दस्तावेजों के लीक होने के बाद शुरूआती दौर में ऐसा लगा था कि यह सारा मामला फर्जी पर है, परंतुइसी बीच एक अमेरिकी अधिकारी ने एसोसिएटेड प्रेस को दस्तावेजों की प्रामाणिकता की पुष्टि कर दी। फिर जब यह खबर आई कि अमेरिका इजराइल की ईरान पर हमले की योजनाओं से संबंधित बेहद गोपनीय जानकारी के लीक की जांच कर रहा है,तो शीघ्र ही मामला बिल्कुल साफहो गया।वहीं, एक अमेरिकी अधिकारी ने सीएनएन को बताया कि यह लीक 'गंभीर चिंता' का विषय है। सचमुच, यह बेहद गंभीर मामला है, क्योंकि इन दस्तावेजों में इजराइल द्वारा ईरान के खिलाफ हमले किए जाने को लेकर इजरायली सेना तथा खुफिया विभाग से जुड़ी तमाम महत्वपूर्ण जानकारियां शामिल हैं। इनमें से कथित रूप से राष्ट्रीय खुफ्यिा एजेंसी वाला दस्तावेज यह बताता है कि इजराइल हथियारों को एक जगह से दूसरी जगह पर ले जा रहा है, जबकि राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी से संबंधित कथित दस्तावेज में इजराइली वायु सेना द्वारा किए जा रहे अभ्यासों का विवरण मौजूद है, जिसमें सतह पर मार करने वाली मिसाइलों का इस्तेमाल करते हुए बताया गया है।

मामले की संवेदनशीलता को इस बात से भी समझा जा सकता है कि लीक हुए दस्तावेजों में से एक में यह भी संकेत दिया गया है कि इजरायल के पास परमाणु हथियार मौजूद हैं। गौरतलब है कि इजरायल स्वयं इसे आज तक सार्वजनिक रूप से पुष्टि करने से हमेशा बचता रहा है। इनके अतिरिक्त इन दस्तावेजों में यह भी बताया गया है कि अमेरिका को इस प्रकार का कोई संकेत नहीं मिला है कि इजरायल ईरान के विरूद्ध परमाणु हथियारों का उपयोग करने की योजना बना रहा है या नहीं। आश्चर्य होता है कि इतने संवेदनशील दस्तावेज आखिर लीक कैसे हो गए, जिनकी पहुंच'फाइव आइज' खुफिया गठबंधन तक ही सीमित थी। बता दें कि इस खुफिया गठबंधन में अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस 'लीक प्रकरण' के बाद इजरायल और अमेरिका के संबंधों में खटास आ सकती है। वैसे यह तो सभी को पता ही है कि इजरायल और अमेरिका अच्छे दोस्त रहे हैं। अमेरिका इजरायल को संकट के समय मदद करने वाला एक विश्वासी सहयोगी के रूप में जाना जाता रहा है, लेकिन देखा जाए तो हाल के दिनों में इजरायल और अमेरिका के संबंधों में थोड़ी दूरियां महसूस की जाती रही हैं।

गौरतलब है कि कुछ सप्ताह पूर्व अमेरिका द्वारा इजरायल को गाजापट्टी में 'सीज-फायर' के दिए गए प्रस्ताव को इजरायली प्रधानमंत्री ने सिरे से खारिज करते हुए अपने हमले को न केवल जारी रखा था, बल्कि हमास के खात्मे तक हमले जारी रखने के अपने संकल्प को दोहराया भी था। बिल्कुल वैसे ही ईरान के मिसाइल हमले के जवाब में प्रस्तावित इजरायली हमले के संदर्भ में इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू के कार्यालय की ओर से यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वे अमेरिका की सलाह तो सुनेंगे, लेकिन अंतिम निर्णय स्वयं करेंगे। इजरायली प्रधानमंत्री के ये बयान यह बताने के लिए काफी हैं कि अमेरिका और इजरायल के बीच में दूरियां बढ़ी हैं और इस बार इजरायली सेना और खुफिया विभाग से जुड़े बेहद संवेदनशील दस्तावेजों के लीक हो जाने के बाद संभव है कि ये दूरियां और बढ़ जाएं। बता दें कि यह 'लीक प्रकरण' ऐसे महत्वपूर्ण समय पर आया है, जब अमेरिका इजरायल से हमास नेता याह्या सिनवार की मौत का लाभ उठाने की बात तो कह ही रहा है, साथ ही वह गाजा में युद्ध विराम पर एक बार फिर इजरायल से विचार करने का आग्रह भी कर रहा है।इसे अन्य प्रकार से कहा जाए तो यह लीक अमेरिका और इजरायल के संबंधों के बेहद नाजुक दौर में हुआ है,जोकि इजरायल को बेहद नाराज करने वालाहै।

अब इजरायल की समस्या यह है कि आखिर वह भरोसा किस पर करे... किसके भरोसे चारों तरफसे घेरे बैठे शत्रुओं का सामना करे। मध्य-पूर्व एशिया के लिए अमेरिका में पूर्व डिप्टी असिस्टेंट डिफेंस सेक्रेटरी के पद पर कार्य कर चुके तथा सेवानिवृत सीआईए अधिकारी मिक मुलरोय के अनुसार इस लीक ने इजरायल की सुरक्षा स्थिति को और जटिल बना दिया है और इससे क्षेत्र में तनाव बढ़ सकता है। सेवानिवृत सीआईए अधिकारी मिक ने इस मामले में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा-'यदि यह सच है कि ईरान के हमले के जवाब में इजराइल की रणनीतिक योजनाएं लीक हुई हैं, तो यह एक गंभीर चूक है।' बहरहाल, इस 'लीक प्रकरण' के बाद अब सारा दारोमदार इजरायल के कंधे पर है। इसलिएसबकी निगाहें उसके अगले कदम पर टिकी हैं। जाहिर है कि उसकी अगली चालों से ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि भविष्य में अमेरिका और इजरायल के बीच के संबंध कैसे रहने वाले हैं और साथ ही यह भी मालूम हो पाएगा कि इजरायल अपनी सुरक्षा स्थिति को और जटिल होने से बचा पाएगा अथवा अमेरिकी मोहरा बनकर उसके ईशारों पर नाचता रहेगा।

(इतिश्री)

फिर लौट के बचपन के जमाने नहीं आते

दृष्टिकोण

रीना मालवीय

लेखक साहित्यकार हैं।

जिंदगी के किसी पड़ाव पर हम पसंद, नापसंद को छोड़ अपने मन की सुनने लगते हैं, फिर उसके अगले पड़ाव पर, जिसे बाबा जाकिर खान ने अपने शब्दों में बयां किया है कि, 'एक होता है 'सही' एक होता है 'मनपसंद', जब तुम सही करते जाओ और मनपसंद छोड़ते जाओ तो समझ जाओ बचपन मर गया है तुम्हारा'।

क्या ये सच है? क्या वाकई मासूमियत, खुशियां, बेफिक्री, सुकून फिर से कहीं नहीं मिलते?

क्या सच में बचपन मर गया? यह सोच कर मन में एक उदासी छा जाती है।

मैं कभी नहीं चाहती थी कि मेरा बचपन मुझसे दूर हो जाए, लेकिन अब यह महसूस करना पड़ रहा है कि वो धीरे-धीरे मुझसे छिटक रहा है।

इसे जिंदा कैसे रखें? किस से जिद करे? किस से करें शिकायत? किस से अपनी जिज्ञासा पूछें? कैसे बेफिक्र होकर जिएं?

मुझे अब भी याद है कि जब किसी दोस्त से लड़ाई हो जाती थी, तो उसे आंख दिखाते हुए दांतों से अंगूठे के नाखून को खींचते कट्टी हो जाते थे, और अगले दिन एक छोटे से प्रयास से सब सुलझा के दो उंगलियां मुंह पे रख, बात फिर से शुरू हो जाती थी।

बस इतना ही तो आसान था सब कुछ।

अब तो कुछ दोस्तों की भी बातें, विचार, आदतें इतना प्रभावित कर देती हैं कि, उनसे फिर कभी उनसे बात करने का मन नहीं करता।

मां से हाथों की मार तो दूर, आंख देख डर जाने वाले हम बच्चे, शरारतें फिर भी कम नहीं करते थे। छुप छुप खेलने निकल जाते, और बिना किसी फिक्र घंटो खेलते रहते। उसके बाद का हश्र तब के लिए तो दुखदायी था, पर आज जब सोचती हूं तो एक मुस्कराहट आ जाती है। छोटी–छोटी चीजों के लिए ज़िद करते और फिर सुनते बहुत सारी बातें। जिनकी डांट सुनते थे आज उनकी सब बातों पे बहस करते हैं। कभी हमारी फिक्र ना करने की सलाह देते हैं तो कभी अपना ख्याल न रखने के लिए उन्हें ही डांटते हैं।

कल ही की बात थी, दिवाली के सजे बाजार देख, बहुत कुछ खरीदने का मन किया, और क्योंकि अब कुछ खरीदने के लिए किसी से ज़िद नहीं करनी पड़ती (बस कैलकुलेशन लगाना पड़ता है), आराम से खरीद भी सकती हूं, पर सोचा, क्यों खरीदना है? ये क्या काम

आएगी? अभी खुश हो जाएगी फिर ऐसे ही कही पड़ा रहेगा? कौन संभाल के रखेगा इसे?

एक मिनट, ये सवाल तो कुछ जाने पहचाने से लग रहे हैं। अरे ऐसा तो मां-पापा भी कहते थे। मैं कब उन जैसी हो गई, भले ही किसी बच्चे को नहीं पाल रही, पर मन के उस बच्चे का क्या जो मैंने कहीं अपने भीतर छुपा के रखा था।

कभी कभी अब भी बचपन जीने की कोशिश करती हूं, लेकिन अचानक कोई उलझन आ जाती और बचपन अचानक जाने कहां गायब हो जाता है। कभी कोई चुप्पी शोर मचाती तो कभी बातों में कई चुप्पियां रह जाती। पर भीतर बस वही नन्हा सा बच्चा है, जो हंसना चाहता है, जो खुद को ढूंढना चाहता है, जो अब थोड़ा मुश्किल सा लगता है, इसलिए शायद बशीर बद्र साहब ने लिखा है कि,

'उड़ने दो परिंदों को अभी शोख़ हवा में
फिर लौट के बचपन के ज़माने नहीं आते।'

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बुझे दीपों को दैदीप्यमान करने के लिए उत्सुक शोध निदेशक

व्यंग्य

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

वे जाने माने शोध निदेशक थे। शोध निदेशक होते ही जाने माने हैं।अनजाना कैसा शोध निदेशक इसलिए उनकी ख्याति दूर-दूर तक एक एक पत्ते-पत्ते पर धूल सी पसरी पड़ी थी। उन्हें अपना उस्ताद बनाने और उनके प्रति समर्पित होने का अनुमोदन पत्र बनवाने के लिए दूर दूर से छंटे हुए सूचित-अनुसूचित आकांक्षी उनके पास आते थे। क्यों दरअसल वह हिंदी साहित्य के बुझे हुए दीपों को शोध कार्य के माध्यम से दैदीप्यमान करने के लिए उत्सुक व समर्पित रहते थे। बस उन्हीं की तरह के कर्तव्यनिष्ठ शोधार्थी उन्हें मिल जायें। इससे उन्हें दोहरा लाभ होता था।शोध के लाभार्थी या उसके अशरीरी होने पर उसके परिजनों की स्नेहिल अनुकम्पा के अतिरिक्त शोधार्थी उन्हें तीज त्यौहार अनुसार नाना रूपों की अभिव्यक्ति से लाभान्वित करते थे। इससे वह भी स्वयं को सम्मानित व गौरवान्वित महसूस करते थे।

उनके शोधार्थियों में शासन की विधि व्यवस्था के अनुरूप पुरुष और महिला दोनों ही वर्गों के विद्यार्थी थे। इनके साथ वह लिंगानुसार व्यवहार करने को अपना मौलिक अधिकार समझते थे। पुरुषों के लिए उनका व्यवहार नारियल के भारी आवरण की तरह कठोर था किन्तु महिलाओं के लिए वह नारियल की गरी जैसे थे। सुस्वादु पौष्टिक लवण व ऊर्जादायी नमीयुक्त।पुरुषों के लिए शोध कार्य की सभी शर्तें अनिवार्य थीं किंतु महिलाओं के लिए मैटरनिटी लीव की तरह कुछ विशिष्ट सुविधाएं प्रदान कर देते थे। यह सुविधाएं केन्द्र व राज्य शासन की मंशानुरुप महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने व अग्रिम पंक्ति में ला खड़े करने के महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही थीं। वह तो निमित्त मात्र थे। शासकीय योजनाओं से इतर उनकी अपनी कोई योजना या इच्छा नहीं थी।इस तथ्य का सार्वजनिक प्रदर्शन वह कीट्स वर्ल्डवर्थ साहित्य के विशेषज्ञ एक पुराने अंग्रेजी प्राध्यापक की तर्ज पर किया करते थे।

वर्तमान युग अभिलाषाओं का युग है अतः लाभ की आशा किसे नहीं होती? इसी आकांक्षा को मूर्त रूप देने के लिए वह पंजीयत शोधार्थियों को हड़काते थे। अब ये भी न करते तो क्या करते इसके शिकार अधिकांशतः वह शोधार्थी होते थे जिन्हें शोध से कोई लेना-देना नहीं होता और जो केवल शोध कार्य के नाम पर चार साल तक शासन से प्राप्त होने वाली धनराशि लूटने व उपलब्ध अन्य सुविधाओं को जीमने के लिए अपना पंजीयन कराते थे। सरकार कुछ वर्गों को विशेष ध्यान रखती है इसलिए उनसे कहने सुनने वाला कोई नहीं होता सिवाय शोध निदेशक जी के।

वह शोध निदेशक थे।अपने जमाने में शोध उन्होंने भी किया था।तब से आज तक इस क्षेत्र में शोधात्मक गतिविधियों का कितना विकास हुआ इसका पूरा चिट्ठा उनके पास था। जब भी कोई पट्ठा या पट्ठी शोध कार्य के लिए प्रकट होती वह पहले दो-तीन महीने उससे शोध विषय पर गहन मंत्रणा करते। शोधार्थी जो भी सुझाता वह उसी बात को पुडिया में लपेट कर उलझा देते। अर्थात् विषय की ऐसी तैसी चलती रहती । वह कुछ कहता निदेशक कुछ और। जैसे-तैसे उनके मध्य बड़ी मेहनत और विमर्श के बाद विषय पर फायनल 'डील होती क्योंकि शोध शीर्षक तय करने के लिए ही निदेशक महोदय बड़ी मेहनत करते थें शोधार्थी के शीर्षक को बदलने-उलटने-पलटने के अतिरिक्त वह उसी के सामने मित्र निदेशकों से भी शोध शीर्षक के संबंध में गहन चर्चा करते थे। इससे उन्हें भावी योजनायें निर्धारित करने में बड़ी सहूलियत होती थी।

वह शोधार्थी के वांछित शीर्षक को जितना बदलने की सामर्थ्य रखते थे, उतना तो बदल ही देते थे, शेष भाग को बदलने का कार्य विश्वविद्यालय की शोध समिति के सदस्य या आमंत्रित शोध विशेषज्ञ के भरोसे छोड़ देते थे। शोधार्थी यदि नई कविता पर शोध करना चाहता था तो विश्वविद्यालय की ओर से अंतिम स्वीकृति नई कहानी पर मिलती थी। ऐसा अपने यहां रिवाज़ है। फिर उसके बाद शुरू हो जाता था शोध निदेशक के बेटे-बेटियों की लघु कथाओं को संभालने सहेजने का महत्वपूर्ण कार्य। यों कुछ गैर जरूरी काम भी शोध कार्य में उसकी मदद करते थे जैसे- घर की सब्जी लाना जल संकट के समय दूर ट्यूबवेल से पानी भरना, राशन - पानी की व्यवस्था करना समय-समय पर लिम्का कोकोकोला बैगपाइपर सोड़ा जैसे वांछनीय-अवांछनीय पेय पदार्थों की पूर्ति करना आदि-आदि।

जो यहां शोध निदेशक हैं वे कहीं और शोध विशेषज्ञ का रूप धारण कर लेते हैं या कर सकते हैं यह संभावना ही शोध को नए आयाम देती है। अत सभी शोध निदेशकों उर्फ शोध विशेषज्ञों में पक्ष-विपक्ष के नेताओं की तरह अलिखित किन्तु मान्यता प्राप्त गुप्त संधि कायम रहती है। इसके तहत शोध ग्रंथ पर अभिमत और मौखिक परीक्षण जैसे क्रियाकर्म शोध ग्रंथ के मृत शरीर के ऊपर से पिछला कर्जा उतारने के बाद ही संभव होते हैं। इसके बाद ही शोध शव को चिता पर लिटाया जाता है। मुखाग्नि लंच या डिनर रुपी ब्रम्ह-भोज पर आधारित होती है,सद्भावना रूपी लिफाफे युक्त कपाल क्रिया के साथ।

यों बीसवीं सदी में शोध कार्य शोध निदेशकों की उदार अनुकंपा पर निर्भर था किंतु इक्कीसवीं सदी के शोधार्थियों को अर्जुन या अभिमन्यु की तरह वीर पुत्र मानना चाहिए। कैसे पूरा करते हैं शोधकार्य इसी पर शोध कार्य होना चाहिए। मैं तो तैयार हूं क्या कोई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय का ईमानदार कुलपति मुझे इसकी अनुमति देगा।

पहल

तानिया आर्या

आत्मनिर्भरता की ओर किशोरियों का पहला कदम

मैं बीए में पढ़ रही हूं. मैं पढ़ लिख कर आत्मनिर्भर बनना चाहती हूं, लेकिन मुझे ये नहीं पता था कि आगे भविष्य में क्या करना है? मैंने सुना है कि आज के युग में कंप्यूटर के ज्ञान के बिना भविष्य नहीं है. नौकरी मिलना संभव नहीं है. लेकिन मेरे पास इसे सीखने की कोई सुविधा नहीं थी. इस दूर दराज़ गांव में किसी के पास कंप्यूटर भी नहीं है. मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद मैं कभी इसे नहीं सीख पाउंगी. लेकिन जब हमारे गांव में चरखा संस्था द्वारा 'दिशा ग्रह' नाम से कंप्यूटर सेंटर खोला गया तो मेरे अंदर एक उम्मीद जगी कि मैं भी इस आधुनिक तकनीक को सीख कर आत्मनिर्भर बनने का सपना पूरा कर सकती हूं. जब मुझे पता चला कि संस्था द्वारा इसे फ्री में गांव की लड़कियों को सिखाया जायेगा तो मुझे बहुत अच्छा लगा. संस्था की मदद से आज मैं कंप्यूटर चलाने में दक्ष हूं. अब मेरे अंदर एक अलग सा आत्मविश्वास जाग चुका है. यह कहना चौरसो गांव की 18 वर्षीय किशोरी श्वेता का. जो गांव में ही रहकर पढ़ाई के साथ साथ कंप्यूटर जैसी तकनीक में भी महारत हासिल कर रही है. श्वेता जैसी चौरसो की कई अन्य किशोरियां भी हैं जिन्होंने दिशा ग्रह से जुड़कर अपने भविष्य को संवार रही हैं.

पहाड़ी राज्य उत्तराखंड के बागेश्वर जिला से 30 किमी और गरुड़ ब्लॉक से करीब 8 किमी दूर छोटे से गांव चौरसो की किशोरियां इस समय न केवल आत्मनिर्भर बनने का सपना देख रही हैं बल्कि उसे पूरा करने की जद्दोजहद में भी लगी हुई हैं. पंचायत में दर्ज आंकड़ों के अनुसार इस गांव की आबादी लगभग 3000 है और साक्षरता दर 90 प्रतिशत के करीब है. जिसमें महिलाओं की साक्षरता दर करीब 45 प्रतिशत है. इस गांव में शिक्षा का स्तर तो संतोषजनक है लेकिन कंप्यूटर जैसी तकनीक के मामले में यह गांव काफी पीछे था. लेकिन दिशा प्रोजेक्ट शुरू होने के बाद से इस गांव की किशोरियों के लिए कंप्यूटर तक पहुंच आसान बन गई है. 19 वर्षीय पायल कहती है कि 'जब से गांव में कंप्यूटर सेंटर खुला है मैं अपना अधिक से अधिक समय इस सेंटर पर देती हूं ताकि भविष्य में मुझे किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो.' वह कहती है कि आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है. वर्तमान में कंप्यूटर के ज्ञान के बिना कुछ भी संभव नहीं है. वहीं नेहा बताती है कि 'जब मैंने पहली बार सेंटर पर कंप्यूटर चलाया तो मुझ में यह विश्वास जगा कि मैं भी जीवन में सफल हो सकती हूं. नौकरी कर आत्मनिर्भर बन सकती हूं. अब मैं पढ़ाई के साथ साथ हर सप्ताह कंप्यूटर सीखने दिशा ग्रह सेंटर जाती हूं. हमेशा मुझे वहां कुछ नया सीखने को मिलता है. अब मुझे लगता है मैं भी अपनी ज़िंदगी में कुछ कर सकती हूं.'

वहीं एक अन्य किशोरी लक्ष्मी कहती है कि 'संस्था द्वारा किशोरियों को केवल कंप्यूटर ही नहीं सिखाया जाता है बल्कि प्रत्येक रविवार को दिशा सभा के माध्यम से किशोरियों के साथ सामाजिक मुद्दों पर चर्चा भी की जाती है. मैं क्या सोचती हूं? मुझे समाज के बारे में क्या लगता है? किशोरियों के अधिकार क्या है? शोषण के खिलाफ किस तरह आवाज़ उठानी चाहिए? अपने भविष्य के लिए मुझे क्या करना चाहिए? आदि सब बातें, जो मैंने इससे पहले कभी किसी के साथ चर्चा नहीं की थी, लेकिन मन में ऐसे प्रश्न उठते रहते थे, इन सभी मुद्दों पर दिशा सभा में खुलकर चर्चा होती है. वह कहती है कि 'कुछ बातें ऐसी होती हैं जो हम घर वालों से नहीं कह सकते, वह हम दिशा सभा में बोल सकते हैं. उन पर हमें सुझाव भी दिए जाते हैं. मुझे संडे को दिशा सभा करना बहुत अच्छा लगता है. जहां खेल-खेल में हम अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं. समाज में जो कुछ घटित हो रहा है और जो हमें पसंद नहीं है, उन चीजों पर भी हम बात करते हैं. लक्ष्मी कहती है कि 'आज के समय में लड़कियों का जहां पढ़ना लिखना आवश्यक है, वहीं समाज में घटित होने वाले मुद्दों पर भी बात करना ज़रूरी है.'

चौरसो में कंप्यूटर सेंटर खुलने से केवल किशोरियां ही नहीं बल्कि उनके माता पिता भी काफी खुश हैं क्योंकि अब गांव में ही रहकर उनकी लड़कियां कंप्यूटर सीख रही हैं. इस संबंध में गांव की एक महिला भागा देवी कहती हैं कि 'हमारे गांव में जब से दिशा ग्रह खुला है मैं बहुत खुश हूं. मेरी पांच बेटियां हैं और मैं चाहती हूं कि लड़कों की तरह वह भी आगे बढ़े. उन्हें भी समान अवसर मिले. लेकिन गांव में इससे पहले ऐसी कोई सुविधा नहीं थी. लड़कियों को कंप्यूटर सीखने 30 किमी दूर बागेश्वर शहर जाना पड़ता, जो मुमकिन नहीं था. एक मां के रूप में मुझे लगता था कि कमज़ोर आर्थिक स्थिति के कारण मेरी बेटियों को भी सुविधाओं के अभाव में शिक्षा प्राप्त करनी होगी. वह कंप्यूटर जैसे महत्वपूर्ण विषय को सीखने से वंचित रह जाएंगी, लेकिन चरखा की पहल से अब वह दिशा ग्रह में जाकर कंप्यूटर सीखती हैं. मुझे बहुत खुशी होती है कि जो हम नहीं कर पाए आज मेरी बेटियां कर रही हैं. मैं उन्हें अपने पैरों पर खड़ा देखना चाहती हूं. वह आत्मनिर्भर बनें और इतनी सक्षम बनें कि अपने फैसले खुद ले सके. चरखा ने दिशा ग्रह सेंटर खोल कर गांव की किशोरियों के लिए कंप्यूटर सीखना आसान कर दिया है. इस संबंध में पंचायत सदस्य बबीता देवी कहती हैं कि इस दूर दराज़ गांव में कंप्यूटर का आना ही कल्पना से परे था. ऐसे में लड़कियों के लिए यह आसानी से उपलब्ध हो जाए यह तो कोई सोच भी नहीं सकता था. लेकिन चरखा संस्था द्वारा दिशा ग्रह के माध्यम से चौरसो जैसे सुदूर गांव की किशोरियों के लिए कंप्यूटर उपलब्ध कराना बहुत महत्वपूर्ण है. इससे उन्हें आगे बढ़ने और आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिलेगी.

ज्ञात हो कि अज़ीम प्रेमजी फॉउंडेशन के सहयोग से चरखा संस्था द्वारा उत्तराखंड के बागेश्वर जिला स्थित गरुड़ और कपकोट ब्लॉक के विभिन्न गांवों में प्रोजेक्ट दिशा संचालित किया जा रहा है. जिसके माध्यम से किशोरियों को विभिन्न माध्यमों से सशक्त किया जाता है. जिसमें उन्हें लेखन और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा के लिए वातावरण तैयार करने के साथ साथ उन्हें कंप्यूटर की ट्रेनिंग भी दी जाती है. इस संबंध में संस्था की डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर नीलम ग्रैंडी कहती हैं कि 'घर की कमज़ोर आर्थिक स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव लड़कियों पर पड़ता है. इसके अतिरिक्त गांव की रूढ़िवादी विचारधारा के कारण भी किशोरियों के आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न होती है. कम उम्र में शादी और अन्य सामाजिक बंधनों के कारण उनका सर्वांगीण विकास प्रभावित होता है. ऐसे में कंप्यूटर सीखना उनके लिए किसी स्वप्न की तरह था. लेकिन दिशा प्रोजेक्ट से जुड़ कर गांव की किशोरियां न केवल कंप्यूटर चलाना सीख रही हैं बल्कि अपने अधिकारों से भी परिचित हो रही हैं. वर्तमान में, दिशा प्रोजेक्ट के माध्यम से गरुड़ और कपकोट के विभिन्न गांवों में करीब 6 'दिशा ग्रह' नाम से कंप्यूटर सेंटर संचालित हो रहे हैं. जबकि चार अन्य भी जल्द खुल जायेंगे ताकि ग्रामीण क्षेत्रों की अधिक से अधिक किशोरियां इस तकनीक में दक्ष हो सके. प्रत्येक दिशा ग्रह सेंटर पर दस से अधिक किशोरियों को कंप्यूटर की ट्रेनिंग दी जा रही है.'

नीलम बताती हैं कि 'इस प्रोजेक्ट को एक चेन की तरह चलाया जा रहा है. जहां एक किशोरी कंप्यूटर सीखने के बाद गांव की दस अन्य किशोरियों को सिखाने का काम करती हैं. जिसके बाद वह दस किशोरियां गांव की अन्य दस किशोरियों को प्रशिक्षित करेंगी. इस तरह धीरे धीरे किशोरियों के माध्यम से ही अन्य किशोरियां कंप्यूटर सीखने लगेंगी. वहीं इस प्रोजेक्ट से जुड़ी किशोरियों को लेखन और कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करना भी सिखाया जाता है. वह गांव के विभिन्न सामाजिक मुद्दों और उससे जुड़ी समस्याओं पर आलेख भी लिखती हैं. जिन्हें चरखा के माध्यम से देश की तीन प्रमुख भाषाओं के समाचारपत्रों और वेबसाइट पर प्रकाशित कराया जाता है. साथ ही उन्हें इन मुद्दों पर संबंधित अधिकारियों से मिलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है. इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य किशोरियों का आत्मविश्वास बढ़ाना और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करना है ताकि वह अपने सपनों को पूरा कर सकें. चरखा द्वारा किये जा रहे यह प्रयास ग्रामीण क्षेत्र की किशोरियों का आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ता पहला और सार्थक कदम कहा जा सकता है.'

सेहत

डॉ. प्रितम भीमराव गेडाम

लेखक स्तंभकार हैं।

अनजाने में मिलावटखोरी के जहर का सेवन

आज के समय में शुद्ध आहार मिलना बेहद मुश्किल हो गया है क्योंकि हर कोई अपने फायदे के लिए दूसरों की जान लेने पर तुला है। कुछ सालों में देश में कैंसर, हृदय विकार, ब्रेन स्ट्रोक और मानवीय अंगो के विफल होने की तादाद अत्यधिक बढ़ गयी है। हर उम्र के लोगों में असामयिक मौत का आंकड़ा लगातार ऊंचाई छू रहा है और मनुष्य शारीरिक व मानसिक तौर पर कमजोर हो रहा है। इन समस्या की मुख्य जड़ मिलावटखोरी का जहर और जहरीला प्रदुषण है। अनजाने में ही सही लेकिन मिलावटखोरी के जहर और प्लास्टिक का सेवन हम रोज कर रहे है। नागपुर का सरकारी अस्पताल, जो एशिया के बड़े अस्पतालों में गिना जाता है, वहां हाल ही में हजारों मरीजों को नकली दवाइयां बाँटी गयी। विश्व प्रसिद्ध तिरुपति मंदिर में प्रसाद के लड्डू में पशु चर्बी के मिलावट का पर्दा फाश हुआ। फसल पर हानिकारक कीटनाशकों का छिड़काव, अनाजों को पोलिश, खाद्यपदार्थों को आकर्षक बनाने के लिए घातक रासायनिक रंगों का प्रयोग, फलों को जल्द पकाने के लिए जानलेवा रसायनों का इस्तेमाल और नकली खाद्यपदार्थ का धड़ल्ले से प्रयोग कर आम लोगों की जान से खिलवाड़ किया जाता है और खाद्य पदार्थों में अस्वछता की गंभीर समस्या तो पहले से ही बनी है। फसलों पर छिड़काव किये जानेवाले कीटनाशकों के जहर के असर का इसी बात से अंदाजा लगा सकते है कि छिड़काव के दौरान असावधानी होने पर मनुष्य तुरंत जान गवांता है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, 2020 से 2021 में भारत में कीटनाशक विषाक्तता से संबंधित मौतों की संख्या में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई हैं। पिछले सप्ताह नागपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में खेत से बहने वाले पानी को पीकर बाघ की मौत हो गयी, क्योंकि वह कीटनाशक मिश्रित जहरीला पानी था।

हमारे देश में त्योहार आते ही जरुरी उत्पादों की मांग बढ़ जाती है और आश्चर्य की बात है कि मांग बढ़ने पर पूर्ति की सामग्री सिमित होने के बावजूद सामग्री के सप्लाई में कमी नहीं आती है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र राज्य में कोजागिरी पूर्णिमा के दिन दूध का विशेष पेय बनाया जाता है। इस दिन दूध की मांग अन्य दिनों के मुकाबले दोगुनी से अधिक होने के बावजूद पूर्ति उससे भी ज्यादा उपलब्ध होती है। अब ऐसा नहीं हो सकता कि केवल खास दिवस पर ही दुधारू पशु दुगना दूध देते है और उत्पादन एक दिन में दुगना हो जायें। अगर गाय एक दिन में 10 लीटर दूध देती है, तो रोज की तरह 10 लीटर ही दूध देगी, फिर अचानक मार्केट में दूध की आपूर्ति कैसे बढ़ जाती है?

मिलावट की इस खाद्य सामग्रियों से स्वास्थ्य की रक्षा कैसे करें? यह गंभीर सवाल उपस्थित होता है। गुणवत्ताहीन और मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन के मामले में फिलहाल हम शिखर पर है। चिकित्सक कहते हैं कि जंक फूड खराब होता है, फलों का सेवन करना बेहतर है, लेकिन अब मार्केट में कैसे फल खरीदे? अपना एक अनुभव साझा कर रहा हूँ, दो दिन पहले मैंने शहर के मुख्य फल मार्केट से अच्छे गुणवत्ता के सेब और मौसंबी खरीदी थी। फलों का बाहरी आवरण देखकर, अच्छी तरह छाँटकर फल खरीदने के बावजूद दूसरे दिन ही उसमे से आधे से ज्यादा फल सड़ गए। फल खरीदते वक्त मैंने फल विक्रेता से आजकल के गुणवत्ताहीन फलों के बारे में शिकायत भी की थी, तो फल विक्रेता का कहना था, कि उनके पास के फल बहुत उच्च गुणवत्ता के है, कोई शिकायत नहीं होगी, फिर भी फल खराब निकले। फलों के जल्दी खराब होने की मुख्य वजह उन पर होने वाली घातक रासायनिक प्रक्रिया है और दूसरी वजह पल-पल बदलता मौसम है।

कंज्यूमर गाइडेंस सोसायटी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट में पाया गया कि बाजार में उपलब्ध 79 प्रतिशत ब्रांडेड या खुला दूध अयोग्यता का गंभीर विषय है। साल 2019 में दूध के पैकेट के 413 नमूनों का परीक्षण किया गया था, उनमें से केवल 87 दूध के नमूने ही भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण द्वारा निर्धारित मानक विनिर्देशों के अनुसार योग्य पाए गए। स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालने वाले दूध में कुछ प्रमुख मिलावट यूरिया, फॉर्मेलिन, डिटर्जेंट, अमोनियम सल्फेट, बोरिक एसिड, कास्टिक सोडा, बेंजोइक एसिड, सैलिसिलिक एसिड, हाइड्रोजन पेरोक्साइड, शर्करा और मेलामाइन हैं। दूध केवल हम पीते ही नहीं है, बल्कि हजारों तरह के खाद्यपदार्थ, मिठाइयां और व्यंजन बनाने में इसी दूध का प्रयोग होता है। देश में उत्पादन से ज्यादा दूध बेचा जाता है। आज दूध से बने अधिकतर खाद्य पदार्थों में शुद्ध दूध का स्वाद ही महसूस नहीं होता है। जबकि उत्पाद पूर्णत: शुद्ध है, हमें ये समझाने का भरसक प्रयास विक्रेता करता है। रिसर्च कहता है कि देश में हर तीसरा व्यक्ति नकली दूध का सेवन कर रहा है।

आज की पीढ़ी बाहर खाना पसंद करती है, हर चीज उन्हें इंस्टेंट चाहिए, गुणवत्ता नहीं, सिर्फ स्वाद ही मायने रखता है। अक्सर सोशल मीडिया पर बहुत से वायरल वीडियो में स्ट्रीट फूड के रंगबिरंगे व्यंजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक दिखाई पड़ते है। 20-30 रुपये के व्यंजन में भी खूब भर-भरकर बटर, पनीर डाला जाता है, जैसे वह शुद्ध बटर न होकर साधा पानी हो, उसकी कीमत के हिसाब से गुणवत्ता क्या होगी, वह हम समझ सकते है। निम्न दर्जे के खाद्य पदार्थ, अधिकतम पैकेट बंद मसाले, सॉसेज, चटनी, और तेल का अधिकतम प्रयोग, स्वच्छता की कमी नजर आती है। बहुत बार खाद्य पदार्थ तलने के बाद भी वह तेल बार-बार उपयोग में लाया जाता है। गर्म खाद्यपदार्थों में भी प्लास्टिक का प्रयोग बेहद हानिकारक है फिर भी उपयोग किया जाता है। ज्यादातर ऐसे व्यंजनों में गुणवत्ता से समझौता किया जाता है और पोषक तत्वों की जगह केवल विषाक्त तत्व ही दिखाई पड़ते है। बाहरी खाद्य पदार्थों में अधिकतर मिलावटी सामग्री के प्रयोग की संभावना ज्यादा होती है। उदाहरण के लिए अगर हम मार्केट से साबुत मसाले लाकर घर पर पिसा मसाला बनाएं, मूंगफली से तेल, दूध से पनीर, टमाटर से सॉस बनाये फिर भी मार्केट में तैयार उत्पाद से कई गुना महंगा उत्पाद हमारा होगा। फिर मार्केट में इतने सस्ते में उत्पाद कैसे बिकते है? जबकि महंगाई का जमाना है।

मिलावटी भोजन अत्यधिक विषैला होता है और कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है, मिलावटी भोजन के सेवन से दस्त, मतली, एलर्जी, मधुमेह, हृदय रोग, किडनी विकार, गुर्दे, कैंसर, लेथिरिज्म, तंत्रिका तंत्र से संबंधित रोग और यकृत सहित अंग प्रणालियों की विफलता शामिल है। कुछ मिलावटों में कार्सिनोजेनिक, क्लैस्टोजेनिक और जीनोटॉक्सिक गुण पाए गए हैं। लैंसेट के अध्ययन में पाया गया कि 2019 में भारत में दूषित पानी से पांच लाख से अधिक मौतें हुईं। हमारे देश में अधिकतर खाद्य पदार्थ हानिकारक तत्वों के साथ मौजूद है, देश में नकली शराब से भी हर साल बड़ी संख्या में मौतें होती है। आज किसी भी खाद्यपदार्थ को सौ फीसदी शुद्ध कहना बहुत मुश्किल है। जंक फूड, मैदा, शक्कर, नमक, तेल पहले से ही धीमे जहर की तरह काम करके घातक बीमारियों से हमें जकड रहे है, ऊपर से देश में बढ़ता प्रदुषण हमारी सांसें कम कर रहा है। लैंसेट अध्ययन के अनुसार, 2019 में भारत में प्रदूषण के कारण 23 लाख से ज़्यादा असामयिक मौतें हुईं। इस मिलावटखोरी की दुनिया में कुछ भी शुद्ध होने का भरोसा नहीं होता। जागरूक रहें, दिखावे पर न जाएं, चटोरी जबान पर नियंत्रण रखें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें, घर के खाद्य पदार्थों को ही प्राथमिकता दें और स्वस्थ रहें।

स्मरण

आरके सिन्हा

लेखक पूर्व सांसद हैं।

सारे विश्व ने भारत से सीखा परोपकार

रतन टाटा के निधन के पश्चात उनके परोपकारी कामों की विस्तार से चर्चा हो रही है। वैसे, जरा गौर करें तो न केवल टाटा समूह, बल्कि भारत के हरेक छोटे-बड़े लाखों कारोबारी या उद्योगपति अपने स्तर पर कुछ न कुछ परोपकार से जुड़े कामों में लगे हुए ही मिल जायेंगे। यह कहना सरासर गलत होगा कि परोपकार की भावना हमने यूरोप से सीखी है। यह कुछ नासमझ अज्ञानियों का प्रचार भर है । भारत में परोपकार की परंपरा प्राचीन काल से ही गहरी जड़ें जमाए हुए है। हम 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया' में विश्वास करने वाले हैं । अभी भी आपको 'पहली रोटी गौ माता को' में विश्वास करने वाले लाखों लोग मिल जायेंगे । धर्म, संस्कृति और समाज के हरेक पहलू में दान, सेवा और परोपकार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथों में परोपकार को 'दान' और 'सेवा' के रूप में वर्णित किया गया है। हिन्दू धर्म में दान और सेवा का बहुत बड़ा महत्व है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासः इन चार आश्रमों में से वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों में परोपकार को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य माना गया है। जैन धर्म में 'दान' को 'अहिंसा' के सिद्धांत के साथ जोड़ा गया है।

भारत भूमि की देन बौद्ध धर्म में भी 'दान' का खासा महत्व है जो सभी प्राणियों के कल्याण के लिए होता है। भगवान बुद्ध ने अपने जीवनकाल में दान, सेवा और अहिंसा का मार्ग दिखाया। गांधी जी ने 'सर्वोदय' के सिद्धांत पर बल दिया और ग्रामीणों की सेवा और विकास के लिए जीवन भर काम किया। मदर टेरेसा ने भी गरीबों, बीमारों और जरूरतमंदों की सेवा करके मानवता की सेवा की।

रतन टाटा की तरह बिड़ला समूह, अजीम प्रेमजी, नंदन नीलकेणी, शिव नाडार जैसे सैकड़ों उद्योगपति परोपकार से जुड़े कार्यों के लिए हर साल हजारों करोड़ रुपया दान देते हैं। भारत के कारोबारियों के डीएनए में 'समाज सेवा' है। टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा की दूरदृष्टि से स्थापित इस समूह ने शुरू से ही समाज सेवा को अपने कार्यों का अभिन्न अंग बनाया है। जमशेद जी के परोपकार के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद थे, जिसे अब उनकी तीसरी पीढ़ी भी निभा रही है ।इसी तरह जिस फक्कड़ संन्यासी के आशीर्वाद से घनश्याम दास बिड़ला ने अपना उद्योग जमाया, उस संन्यासी के आशीर्वाद से 'करनी और बरनी' का काम आज भी बिड़ला समूह अपना रहा है । यह अपने धर्मार्थ कार्यों के माध्यम से भारत में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव डालता है, जो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जमशेदजी टाटा को यह प्रेरणा स्वामी विवेकानंद जी से ही प्राप्त हुई थी। शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन में जाने के पूर्व जब वे दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहे थे तो उन्हें यह बात खली कि दक्षिण भारत में विज्ञान की उच्चतर शिक्षा प्रदान करने वाला कोई संस्थान नहीं है। तब उन्होंने विचार किया कि इस काम में टाटा स्टील के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा उपयुक्त व्यक्ति होंगें और उन्होंने शिकागो जाने के पूर्व उन्हें एक पत्र लिखा। स्वामीजी ने टाटा को लिखा कि 'आप बिहार के जमशेदपुर से अच्छा पैसा कमा रहे हो। मेरी शुभकामना है कि और ज़्यादा धन अर्जित करो और ज़्यादा लोगों को रोज़गार दो । लेकिन, विज्ञान की उच्चतर शिक्षा से वंचित दक्षिण भारत की भी थोड़ी चिंता करो और दक्षिण भारत में कहीं भी विज्ञान की ऊँची पढ़ाई और रिसर्च का कोई बढ़िया संस्थान स्थापित करो। मैं जानता हूँ कि तुम यह कर सकते हो और विश्वास ही कि तुम ऐसा ही करोगे।' स्वामी विवेकानंद जी की इस प्रेरक चिट्ठी पढ़ने के बाद जमशेदजी इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने बैंगलुरु में तत्काल ही एक विज्ञान का बढिया संस्थान शुरू कर दिया जो आज 'इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस' के नाम से विश्व विख्यात हैं और जो प्रतिभाशाली बच्चे वैज्ञानिक बनाना चाहते है, या रिसर्च या अध्यापन कार्य में अपना करियर बनाना चाहते हैं वे किसी भी आईआईटी में जाने से ज़्यादा आईआईएस में जाना ज़्यादा पसंद करते हैं।

महात्मा बुद्ध, गुरु नानक, और अन्य संतों ने भी परोपकार पर जोर दिया। मध्ययुगीन भारत में, राजाओं और धनिकों द्वारा अनेक धर्मार्थ संस्थानों की स्थापना की गई, जो स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, और गरीबों की सहायता के लिए समर्पित थे। आपको हरेक गांव, कस्बे, शहर वगैरह में गैर सरकारी प्रयासों से चल स्कूल, कॉलेज, धर्मशालाएं, लंगर और प्याऊ वगैरह मिल जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने 'दीन-दुखिया जन' के लिए सेवा को सर्वोच्च धर्म बताया। उनका मानना था कि सामाजिक सेवा ही सच्चा धर्म है। विवेकानंद ने सर्वधर्म समभाव और मानवतावाद का संदेश देते हुए, हर व्यक्ति के कल्याण के लिए काम किया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी भारत में विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक सेवाएं प्रदान करता है।

अभी कुछ दिन पहले शारदीय नवरात्र समाप्त हुए। इस दौरान देश की राजधानी दिल्ली समेत देश के तमाम शहरों में भंडारे चलते रहे । आप कह सकते हैं इस दौरान भंडारों की बहार थी। सब भंडारे के प्रसाद को प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण कर रहे थे। भंडारों में समाज वादी व्यवस्था वास्तव में बहुत प्रभावशाली होती है। भंडारों में प्रसाद के रूप में बंटते हैं छोले,कुलचे,हलवा,पूढ़ी-आलू, ब्रेड पकोड़ा आदि। कुछ भंडारों में खीर का प्रसाद भी वितरित होता है। देश की राजधानी दिल्ली भंडारों की भी राजधानी है। कहने वाले कहते हैं कि कैसेट किंग गुलशन कुमार ने भंडारा संस्कृति का पुनर्जागरण किया था। उन्होंने वैष्णो देवी में भंडारे का आयोजन शुरू किया था। तब दिल्ली वाले वैष्णो देवी में जाकर गुलशन कुमार की तरफ से चलने वाले भंडारे में भोग अवश्य लगाया करते थे। यहां से ही भंडारा संस्कृति न पैर जमाए थे।

भंडारे के प्रसाद की बात ही अलग होती है। इसका स्वाद अतुल्नीय होता है। ये भंडारे की महिमा ही मानी जाएगी। भंडारा अपने आप में जात-पात और वर्ग की दीवारों को तोड़ता है। इसमें सब प्रेम से प्रसाद लेते हैं। भंडारे का प्रसाद पूरे अनुशासन से लिया जाता है। कनॉट प्लेस में रोज हजारों लोग नवरात्रों के दौरान भंडारे का प्रसाद खाते हैं।जो भंडारा आयोजित करते हैं, वे या तो हनुमान मंदिर के आगे से प्रसाद खरीद कर बांट देते हैं या फिर खुद ही कहीं से बनवा कर लाते हैं। भंडारों की एक खास बात ये भी है कि इनसे प्रसाद हिन्दू, मुसलमान,सिख, ईसाई सब ग्रहण करते हैं।

साउथ दिल्ली के पिलंजी गांव में कुछ युवकों ने कुछ साल पहले 'बालाजी कुनबा' नाम से एक संगठन स्थापित किया। इसका मकसद है भूखों की भूख मिटाना। ये हर रोज एम्स, सफदरजंग अस्पताल, राम मनोहर लोहिया अस्पातल के आगे बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश वगैरह से रोगियों के साथ आए तीमारदारों को भरपेट भोजन करवाते हैं। कौन हैं बालाजी कुनबा के सदस्य? यह सब हनुमान जी के भक्त हैं। इनकी कारों पर हनुमानजी की तस्वीर वाला एक बैनर लगा होता है। जिस पर 'बालाजी कुनबा- एक परिवार भूख के खिलाफ' लिखा रहता है। भंडारे के लिए पैसे का जुगाड़ पिलंजी गांव के लोग ही करते हैं। यह अधिकतर गुर्जर समाज से संबंध रखते हैं। आप भंडारा संस्कृति को भी तो जन सेवा ही कहेंगे। क्या अब भी किसी को बताने की जरूरत है कि परोपकार औस समाज सेवा तो हरेक भारतीय के जीवन का हिस्सा है। यकीन मानिए आपको अमेरिका या यूरोप में कहीं कोई भंडारा नहीं मिलेगा। अब आप भारत और यूरोप अंतर को समझ गए होंगे।

ब्राह्मण समाज अध्यक्ष साक्षी शर्मा ने आनंद आंगनबाड़ी केंद्र में पहुंचाया जरूरत का सामान

बैतूल। राज्य आनंद संस्थान की अवधारणा 'मदद' के तहत 'हर घर दिवाली' अभियान चलाया जाना है जिसके तहत प्रत्याशा आनंद क्लब बैतूल ने नगर वासियों से आवाहन किया था कि इस वर्ष सभी लोग ऐसा सामान, जो उनके पास आवश्यकता से अधिक है उसे उन लोगों तक पहुंचाएं, जिनके पास उन चीजों की कमी है। इसी के तहत आज आनंद आंगनबाड़ी केंद्र विकास वार्ड में सनातन ब्राह्मण समाज की अध्यक्ष साक्षी शर्मा ने कपड़े साड़ियां ,पर्स इत्यादि आंगनवाड़ी में पहुंचाएं, श्रीमती स्वाति सोनी भवानीधाम भोपाल द्वारा भी समय समय पर भोपाल से कपड़े, स्कूल ,बैग, खिलौने भेट किये जाते है। निमिषा शुक्ला द्वारा बच्चो को टॉफी पेंसिल वितरित की गई। साक्षी शर्मा ने कहा कि हर घर दिवाली अभियान से हमारे द्वारा छोटे से प्रयास से हर घर तक खुशियाँ पहुँचाई जा सकती हैं। आप सब भी इस भागीदारी में सहयोग अवश्य करे। हमारे लिए सौभाग्य की बात है की हम किसी के लिए खुशी का माध्यम बन सके। इस अवसर पर प्रत्याशा आनंद क्लब अध्यक्ष तुलिका पचौरी, निमिषा संजय शुक्ला, आंगनबाड़ी केंद्र सहायिका उषा सातनकर, गीता रावत ,शारदा वानखेडे, करुणा जैन एवं संजय कॉलोनी की महिलाएं उपस्थित थीं। यह सामान आंगनबाड़ी केंद्र में व्यवस्थित रूप से रखा जाता है इसके बाद जिन्हें उनकी आवश्यकता है, यहां से दे दिए जाते हैं।

अवैध महुआ शराब के अड्डों पर दी पुलिस ने दबिश

थाना मुलताई, आबकारी बैतूल व थाना मोर्शी (महाराष्ट्र) पुलिस की संयुक्त कार्यवाही

बैतूल। पुलिस द्वारा आगामी दीपावली त्योहार के मद्देनजर, कानून व्यवस्था को सुनिश्चित करने एवं अवैध कच्ची महुआ शराब की बिक्री और परिवहन की रोकथाम हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में आज शुक्रवार 25 अक्टूबर 2024 को एसडीओपी मुलताई मयंक तिवारी एवं थाना प्रभारी मुलताई राजेश सातनकर के मार्गदर्शन में थाना मुलताई, आबकारी विभाग बैतूल एवं थाना मोर्शी (महाराष्ट्र) की संयुक्त टीम ने कार्रवाई को अंजाम दिया। इस दौरान सालबर्डी एवं झुनकारी क्षेत्र में अवैध महुआ शराब निर्माण के ठिकानों पर दबिश देकर चार ड्रमों में लगभग 800 किलो महुआ लाहन बरामद कर विधिवत नष्ट किया गया। नष्ट किए गए लाहन की अनुमानित कीमत लगभग 40,000 रुपये है। इसके बाद चौकी मासोद थाना मुलताई पुलिस एवं आबकारी विभाग बैतूल की टीम द्वारा ग्राम काजली, जामठी, सवासन, एवं मासोद में अवैध शराब निर्माण के ठिकानों पर छापेमारी

की गई। इस छापेमारी में 15-15 लीटर के केनों एवं ट्यूब में भरे लगभग 3000 किलो महुआ लाहन को नष्ट किया गया, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग 3,00,000 रुपये है। इस कार्यवाही में चौकी मासोद से उपनिरीक्षक बसंत आहके, आरक्षक मेहमान कवरेती, गोपाल परमार, राजा वर्मा, लक्ष्मीचंद चौरिया, आबकारी विभाग से दिलीप भादे एवं स्टाफ तथा थाना मोर्शी से निरीक्षक नितिन देशमुख एवं पुलिस बल का विशेष योगदान रहा। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया ने कहा कि आगामी त्योहारों के मद्देनजर ऐसे अभियान लगातार जारी रहेंगे, ताकि अवैध गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके।

थाना कोतवाली पुलिस ने दुष्कर्म के फरार आरोपी को किया गिरफ्तार

बैतूल। कोतवाली बैतूल में गत 15 अक्टूबर को एक नाबालिग पीड़िता ने शिकायत दर्ज कराई थी कि आरोपी नितेश

बारस्कर ने उसे बहला-फुसलाकर अपने साथ ले जाकर जानते हुए कि वह नाबालिग है, उसके साथ दुष्कर्म किया। इस शिकायत पर आरोपी के विरुद्ध अपराध दर्ज कर, बीएनएस और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया था। घटना के बाद से आरोपी फरार था। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देशानुसार आरोपी की गिरफ्तारी हेतु एक विशेष टीम का गठन किया और लगातार आरोपी की तलाश की जा रही थी। मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि आरोपी सदर क्षेत्र में देखा गया है। इस सूचना के आधार पर कोतवाली पुलिस की टीम ने सतपाल आश्रम के पास से आरोपी नितेश बारस्कर, पिता राजू उर्फ रज्जू, उम्र 22 वर्ष, निवासी कुम्हीढाना, बक्का चिखली, थाना चिचोली को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

मिठाई, नमकीन सहित खाद्य पदार्थों के लिए सेम्पल, आने वाले दिनों में भी जारी रहेगी कार्रवाई

मिलावटखोरों में खाद्य विभाग की कार्रवाई से हड़कंप, अब तक आधा सैकड़ा से अधिक सेम्पल कलेक्ट

संजय द्विवदी बैतूल।

दीपावली पर्व को महज चंद दिन बचे है। ऐसे में मिठाईयां बनाने और बेचने का कारोबार भी शुरू हो जाता है। त्यौहार के चलते मिठाईयों की सबसे ज्यादा मांग रहती है। इसी का फायदा उठाकर कुछ मिलावटखोर केमिकलयुक्त मिठाइयों को बेचकर लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ करते है। अब ऐसे लोगों से निपटने के लिए विभाग कुछ दिन से सक्रिय है। खाद्य एवं औषधि प्रशासन के खाद्य सुरक्षा अधिकारी संदीप पाटिल ने बताया कि अलग-अलग क्षेत्रों में पहुंचकर खाद्य पदार्थो के सेम्पल लिए जा रहे है। खाद्य पदार्थों में मिलावट पाई जाती है तो संबंधित के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। खाद्य विभाग की इस कार्रवाही से मिलावटखोरों में हडक़ंप है। दरअसल कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर मिलावट से मुक्ति अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा विभाग जिले में खाद्य पदार्थों का विक्रय करने वाले प्रतिष्ठानों से सैंपल लिए जाने की कार्रवाई कर रहा है। इस दौरान प्रतिष्ठानों, दुकानों के लाइसेंस और रजिस्ट्रेशन की भी जांच की गई। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने निरीक्षण में संचालकों को रख-रखाव की समझाइश दी है।

मिठाइयों में करते हैं केमिकलयुक्त रंगों का इस्तेमाल

त्योहारी सीजन में देखने में आता है कि मिलावटखोर अधिकतर सक्रिय होते है। खासतौर पर मिठाइयों में हानिकारक केमिकल युक्त रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। यह केमिकल युक्त रंग सेहत के लिए नुकसानदायक होते है। बताया जाता है कि मिठाइयों को चमकदार बनाने के लिए मिलावटखोर अलग-अलग केमिकल का इस्तेमाल करते है। केमिकलयुक्त मिठाई खाने से शरीर में कई प्रकार की बीमारियों का खतरा बना रहता है। जब कोई व्यक्ति मिठाई का सेवन करता है, उसमें तत्काल तो कोई नुकसान सामने नहीं आता है, लेकिन बाद में इसके परिणाम सामने आते है।

त्योहारी सीजन में प्रतिदिन कार्यवाही

खाद्य एवं औषधि विभाग त्यौहार को ध्यान में रखते हुए प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों में कार्रवाई कर रहा है। अधिकारियों का कहना है कि मिठाइयां सहित अन्य खाद्य पदार्थों की दुकानों पर जाकर सेम्पल ले रहे है। किसी के द्वारा कोई शिकायत की जाती है तो वहां पर भी पहुंचकर सेम्पल लेकर कार्रवाई की जाती है। मिलावटी मावे पर भी नजर बनी हुई है। साप्ताहिक बाजार में त्योहारों के समय कई लोग बड़ी संख्या में मावा बेचने आते है। मावे के भी सैंपल लिए जा रहे है। अभी तक जो सेम्पल लिए गए है, जिसकी रिपोर्ट आई नहीं है। अधिकारियों का कहना है कि जहां भी खाद्य पदार्थ में मिलावट पाई जाएगी, उनके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करेंगे, उसमें जुर्माने का भी प्रावधान है।

अभी तक करीब 150 से अधिक लिये सेम्पल

खाद्य सुरक्षा अधिकारी संदीप पाटिल ने बताया कि अभी तक जिले में 150 से अधिक सेम्पल लिये जा चुके हैं। गुरुवार को खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने टीम के साथ प्रभातपट्टन एवं शाहपुर में स्थित होटल तथा

दुकानों का औचक निरीक्षण कर 14 सैंपल लिए। इस दौरान प्रतिष्ठानों, दुकानों के लाइसेंस और रजिस्ट्रेशन की भी जांच की गई। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने निरीक्षण में संचालकों को रख-रखाव की समझाइश दी। सारणी की होटलों-दुकानों से 14, मुलताई, आठनेर तथा आमला में 22 और खेड़ी सांवलीगढ़ में खोआ के 6 और मिठाई के 6 इस तरह कुल 12 सैंपल लिये है। आमला तहसील की दुकान से दही के 1, घी के 1, नमकीन के 2 तथा लड्डू के 2 इस प्रकार कुल 6 सैम्पल लिए गए। मुलताई तहसील से शशि भारतीय ने चॉकलेट के 1, दूध के 1, नमकीन के 1, लड्डू के 1, सोनपापड़ी के 1 तथा मिठाई के 4 इस प्रकार कुल 10 सैम्पल लिए। आठनेर तहसील से मीना कुमरे ने बादाम बर्फी के 1, किशमिश के 1, पेड़ा के 1, नमकीन के 2 तथा सोयाबीन तेल के 2 इस प्रकार कुल 6 सैम्पल लिए गये है। इसके अलावा सारनी की मिठाई दुकान से रसगुल्ला के 1, लड्डू के 1, मिठाई पेड़ा के 5, कलाकंद के 1, बर्फी के 3, काजू कतली के 1, चॉकलेट बर्फी के 1, मिल्क केक के 1 इस प्रकार कुल 14 सैंपल लिए गए। लिए गए सैंपल खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे जाएंगे तथा जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जाएगी।

इनका कहना है -

विभाग द्वारा मुलताई, आमला, आठनेर, सारणी सहित अन्य क्षेत्रों में जाकर दुकानों से मिठाई और नमकीन सहित अन्य खाद्य पदार्थों के सेम्पल लिए है। यह सेम्पल जांच के लिए भेजे गए। मिलावट पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी। जिन लोगों को मिठाईयों में मिलावट का संदेह है, वह भी खाद्य विभाग के कार्यालय में शिकायत कर सकते है।

संदीप पाटिल, खाद्य सुरक्षा अधिकारी, बैतूल

खाद्य विभाग ने शुक्रवार को लिए 24 सैंपल

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर मिलावट से मुक्ति अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा जिले में खाद्य पदार्थों का विक्रय करने वाले प्रतिष्ठानों से सैंपल लिए जाने की कार्रवाई की जा रही है। अभियान के तहत अभिहित अधिकारी खाद्य सुरक्षा प्रशासन शैलेंद्र बड़ोनिया के मार्गदर्शन में शुक्रवार को राजस्व एवं खाद्य सुरक्षा प्रशासन ने संयुक्त कार्रवाई की। अनुविभागीय अधिकारी बैतूल राजीव कहार के नेतृत्व में खाद्य सुरक्षा अधिकारी संदीप पाटिल ने टीम के साथ बैतूल में स्थित होटल तथा दुकानों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान प्रतिष्ठानों, दुकानों के लाइसेंस और रजिस्ट्रेशन की भी जांच की गई। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने निरीक्षण में संचालकों को रख-रखाव की समझाइश दी। खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री पाटिल ने बैतूल की मिठाई दुकान से मिठाई के 6, खोवा के 2, गजक के 4 व नमकीन के 4 इस प्रकार कुल 16 सैंपल लिए गए। तहसीलदार चिचोली के नेतृत्व में चिचोली से खाद्य सुरक्षा अधिकारी शशि भारतीय द्वारा 8 नमूने लिए गए। लिए गए सैंपल खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे जाएंगे तथा जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जाएगी।

भाजपा का सक्रिय सदस्यता अभियान प्रारंभ

विधायक की उपस्थिति में आयोजित बैठक में बनाए गए अभियान प्रभारी

बैतूल/मुलताई। भाजपा संगठन पर्व सदस्यता अभियान के तहत प्राथमिक सदस्यता अभियान के बाद भाजपा सक्रिय कार्यकर्ता सदस्यता अभियान चला रही है। जिसको लेकर भाजपा कार्यालय मुलताई में विधायक चंद्रशेखर देशमुख, नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर, भाजपा

मंडल अध्यक्ष गणेश साहू की उपस्थिति में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में भाजपा की सक्रिय सदस्यता को लेकर विस्तार से चर्चा की गई एवं इसकी रूपरेखा बनाई गई। भाजपा मीडिया प्रभारी एडवोकेट राघवेंद्र रघुवंशी ने बताया कि सक्रिय सदस्यता अभियान के लिए नगर मंडल का प्रभारी तुलसीराम बारस्कर को और सह प्रभारी श्यामू ढोमने को बनाया गया हैं। भाजपा में वे कार्यकर्ता सक्रिय सदस्यता के लिए पात्र होंगे, जिन्होंने प्राथमिक सदस्यता अभियान के दौरान खुद की आईडी से 50 या उससे ज्यादा लोगों को भाजपा की सदस्यता दिलवाई हैं। मंडल से जिन कार्यकर्ताओं द्वारा संगठन द्वारा निर्धारित पात्रता मापदंड को पूरा किया है उनकी सूची बनाकर जिला संगठन को भेजी जाएगी। इस प्रकार आगे चलकर इन सक्रिय सदस्यों को ही पार्टी के अलग अलग दायित्व सौंपे जायेंगे। इस दौरान बैठक में भाजपा वरिष्ठ नेता राजेश पाठक, मंडल महामंत्री सुनील बिहारे, जगदीश दवंडे, बब्बल सेवतकर, बीरबल डोंगरदिए,श्रवण नागले, राजू चौबे, जयदीप ठाकरे, राजू चौहान, जया जैन, वीना पंजाबी, धर्मेंद्र नरवरे, नवीन पवार, योगेश पवार, अभिषेक खंडेलवाल, सजल शिवहरे, गजनी साहू सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ताओ की उपस्थिति रही।

सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल और आरडी पब्लिक स्कूल के मध्य हुआ पहला मैच

पुलिस लीजेंड और प्रशासन 11 के मध्य टूर्नामेंट आज

बैतूल। जिला क्रिकेट एसोसिएशन बैतूल के तत्वावधान में लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आयोजित सेंट थेरेसा इंटर स्कूल टूर्नामेंट में शुक्रवार 25 अक्टूबर को दो सेमीफाइनल खेले गए। पहला मैच सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल और आरडी पब्लिक स्कूल के मध्य हुआ। इस अवसर पर ट्रैफिक इंचार्ज गजेंद्र केन ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया एवं ट्रैफिक नियमों का पालन करने सहित अन्य जानकारियां दी।

आरडी पब्लिक स्कूल ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए चार विकेट पर 79 रन बनाए। इसमें सबसे ज्यादा 24 रन तोशांत पवार तथा विराज ने 17 रन 31 गेंद पर बनाएं और कोई बल्लेबाज ज्यादा योगदान नहीं दे सके। सतपुड़ा वैली की ओर से विनीत और रुद्र ने दो-दो विकेट लिए। 80 रनों का लक्ष्य सतपुड़ा वैली स्कूल ने बिना विकेट खोए लक्ष्य प्राप्त कर लिया। इसमें हिमांशु चढ़ोकार ने 47 तथा दिव्यांशु ने 21 रन बनाए।

दूसरा सेमीफाइनल सेंट थेरेसा स्कूल और एमजीएम सारणी स्कूल के मध्य खेला गया। सेंट थेरेसा के कप्तान ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी चुनी। इसमें निर्धारित ओवरों में सेंट थेरेसा ने 127 रन 5 विकेट पर बनाए। इसमें साहिल कवड़े ने 60 रनों का योगदान दिया जबकि आर्यन ठाकुर ने 15 रन बनाए

ट्रैफिक इंचार्ज गजेंद्र केन ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया एवं ट्रैफिक नियमों का पालन करने सहित अन्य जानकारियां भी दी।

जबकि एमजीएम स्कूल की ओर से निखिल ने 3 तथा विवेक ने 2 विकेट लिए। बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एनजीएन सारणी स्कूल ने तेजी से रन बनाएं परंतु लक्ष्य से दो रन दूर रह गए। उन्होंने कुल 102 रन ही बना सके। एमजी स्कूल की ओर से यश ने 39 तथा विवेक ने 17 रनों का योगदान दिया। सेंट थेरेसा की ओर से समर मेमन ने दो तथा साहिल कवड़े ने एक विकेट लिया। आज 26 अक्टूबर को फाइनल सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल और सेंट थेरेसा स्कूल के मध्य प्रात: 8 बजे से खेला जाएगा। डीसीए के सचिव अनिल दीक्षित ने बताया कि आज दोपहर 12 बजे से स्मृति कप अधिकारी कर्मचारी टूर्नामेंट प्रारंभ हो रहा है। पहला मैच पुलिस लीजेंड और प्रशासन 11 के मध्य होगा। यह टूर्नामेंट अवकाश दिवस में ही खेला जाएगा।

रविंद्र देशमुख आत्महत्या मामले में दो और आरोपियों की गिरफ्तारी, भेजा जेल

बैतूल/सारणी। थाना सारणी के अंतर्गत बगडोना निवासी रविंद्र देशमुख की आत्महत्या के मामले में सारणी पुलिस ने सुसाइड नोट के आधार पर कार्रवाई करते हुए दो और आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। इस प्रकार प्रकरण में अब तक कुल 6 आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। ज्ञात हो कि मृतक के सुसाइड नोट में 10 लोगों का नाम दर्ज था, जिन पर मृतक को मानसिक और आर्थिक रूप से प्रताड़ित करने तथा उसकी सामाजिक छवि को धूमिल करने का आरोप लगाया गया। नामजद आरोपियों में रंजीत सिंह, प्रकाश शिवहरे, दीपक शिवहरे, प्रमोद गुप्ता, अभिषेक साहू, मोहम्मद नसीम रजा, शमीम रजा, नाजिया बानो, करण सूर्यवंशी और भोला सिंह उर्फ रामनारायण सिंह शामिल हैं। इन सभी के खिलाफ

थाना सारणी में अपराध के तहत मामला पंजीबद्ध कर विस्तृत जांच जारी है।

दो आरोपियों की गिरफ्तारी-पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया के निर्देशानुसार, आरोपियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी के लिए लगातार प्रयास जारी है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए गठित की गई विशेष अनुसंधान दल (एसआईटी) ने आरोपी भोला सिंह उर्फ रामनारायण सिंह और शमीम रजा को गिरफ्तार किया। आरोपियों को बैतूल लाकर आज दिनांक 25.10.2024 को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इस प्रकरण में पुलिस द्वारा पहले ही प्रमोद गुप्ता, दीपक शिवहरे, अभिषेक साहू और मोहम्मद नसीम रजा को गिरफ्तार किया जा चुका है।

इस कार्रवाई में विशेष अनुसंधान दल के निरीक्षक अरविंद कुमरे, निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उपनिरीक्षक वंशज श्रीवास्तव, प्रधान आरक्षक आसिफ, वसंत, आरक्षक रविमोहन, सुभाष मंडलोई, राजू वरकड़े ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुलिस अधीक्षक द्वारा विगत दिनों फरार आरोपियों की इनाम उद्घोषणा की राशि बढ़ाकर 5000 की जा चुकी है।

बैतूल की वीराओं का दुबई में अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मान

महावीर इंटरनेशनल सम्मेलन में पेश की सेवा की मिसाल

बैतूल। महावीर इंटरनेशनल संकल्प की 12 वीराओं ने हाल ही में दुबई में आयोजित अमुधा चतुर्थ वीरा सम्मेलन में शामिल होकर भारत का गौरव बढ़ाया। वीरा सरला तातेड़ , वीरा पूनम मेहता, पिंकी पगारिया, राजुल शाह, हंसा शाह, साधना गोठी, मंगला गोठी, खुशबू शाह, मीनाक्षी शुक्ला, मानसी शुक्ला, प्रतिभा लुहाड़िया, विजया लुहाड़िया जब लौटकर भारत पहुंची तो इनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस सम्मेलन में देशभर की 125 वीराओं ने पीड़ित मानवता की सेवा का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। महावीर इंटरनेशनल का यह आयोजन दुबई के प्रतिष्ठित इंडिया क्लब में हुआ संस्था की मीडिया पर्सन वीरा वंदना पगारिया ने बताया कि इसमें महावीर इंटरनेशनल अपेक्स के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष वीर अनिल जैन, यूएई डीपीएस एकेडेमी के चेयरमैन दिनेश कोठारी और अजमान फ्री ज़ोन के एचई इस्माइल अल नकी जैसी महान हस्तियों ने शिरकत की। सम्मेलन में विभिन्न देशों से आए गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति से इस आयोजन को गरिमा और वैश्विक पहचान मिली। मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों ने महावीर इंटरनेशनल द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की जमकर सराहना की।

इस अवसर पर वीरा प्रतिभा

लुहाड़िया और वीरा सरला तातेड़ को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

सेवा कार्यों को विदेशों तक पहुचाने का संकल्प-अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष वीर अनिल जैन ने महावीर इंटरनेशनल के सेवा कार्यों की जानकारी दी, ताकि विदेशों में बसे भारतीय और अन्य समुदाय के लोग इन सेवाभावना से प्रेरित होकर जुड़े रह सकें। वीर अनिल जैन ने कहा, महिलाए अपने आप में सशक्त हैं और इस संगठन का 50वां स्वर्ण जयंती वर्ष का उत्सव सिर्फ वीराओं द्वारा दुबई में मनाना इस बात का प्रतीक है कि अब उन्हें पंख मिल चुके हैं और वे हर ऊचाई तक पहुचने के लिए तैयार हैं।

सम्मेलन में बैतूल की वीराओं का विशेष योगदान-सम्मेलन में बैतूल की वीराओं ने अपनी सेवा की भावना और समाज के प्रति अपने समर्पण का परिचय दिया। इस अवसर पर डीपीएस अकेडमी यूएई के चेयर पर्सन दिनेश कोठारी, काउंसिल पासपोर्ट सीजेआई दुबई के सुनील कुमार, संस्थापक निदेशक डॉक्टर केसर सिंह कोठारी, आईओसी मध्य पूर्व दुबई के प्रबंध निदेशक सचिन शर्मा, और एमजीटी समूह के अध्यक्ष अशोक पुरी जैसे दिग्गजों ने अपने विचार साझा किए। दुबई के मिसेज़ यूएई इंटरनेशनल 2022 और मिसेज़ यूएई एलीमेंट्स 2022 ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्तिकेय बोले-भाजपा का चोला पहन असंतोष फैला रहे कांग्रेसी

बुधनी में पार्टी को बताया एकजुट; पूर्व विधायक राजपूत ने कहा-सब पहले से कन्फर्म था

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की परंपरागत बुधनी विधानसभा सीट पर बीजेपी अंतर्विरोध से जूझ रही है। 2005 में शिवराज सिंह चौहान के लिए विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देने वाले तत्कालीन विधायक राजेंद्र सिंह राजपूत 2024 के उपचुनाव में यहां रमाकांत भार्गव को टिकट देने से नाराज हैं।राजपूत ने दो दिन पहले समर्थकों की बैठक बुलाई। इस बैठक में कार्यकर्ताओं ने रमाकांत को टिकट देने पर खुलकर नाराजगी जाहिर की। राजपूत समर्थकों की बैठक और नाराजगी को लेकर शिवराज के बेटे कार्तिकेय सिंह चौहान का बयान सामने आया है।कार्तिकेय ने राजपूत समर्थकों की बैठक पर कहा, मैं यहां पर सबसे मिलने आया। पूछा- काहे की नाराजगी है। वे बोले- भैया ये तो आजू-बाजू

वाले बात कर रहे थे। आजू-बाजू वाले कौन हैं तो कुछ असामाजिक तत्व कांग्रेस के बैठा दिए, जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी का चोला पहन लिया।

कांग्रेस के लोग भाजपा का चोला पहनकर असंतुष्टि फैला रहे

कार्तिकेय ने कहा- कांग्रेस के लोग भाजपा का चोला पहनकर असंतुष्टि फैला रहे हैं। आज मैंने चार मंडलों की बैठकें लीं। कहीं किसी भी रूप से कोई असंतुष्ट नहीं है। कांग्रेस के लोगों में असंतुष्टि है क्योंकि कई साल से इस क्षेत्र में वो लोग जीत नहीं पाए हैं और वो असंतुष्ट ही रहेंगे, ये हम सुनिश्चित करेंगे। कार्तिकेय ने कहा-कोई नाराजगी नहीं है। हम सब परिवार के सदस्य हैं। सहमति बन चुकी है। ऐतिहासिक जीत होगी। यहीं के कार्यकर्ता रिकॉर्ड बनाते आए हैं। हम संगठन के लोग हैं, संगठन की बारीकियों से काम करते हैं। कोशिश करेंगे कि हर पोलिंग बूथ पर भारतीय जनता पार्टी अच्छे वोटों से जीते।

राजपूत बोले-मुझे कांग्रेस ने टिकट ऑफर किया था

मीडिया से चर्चा में पूर्व विधायक राजेंद्र सिंह राजपूत ने कहा- मैं पद लोलुप नहीं हूं। अगर पद लोलुप होता तो मुझे कांग्रेस ने भी टिकट के लिए मनाया था। राजकुमार के पहले मुझे टिकट देने का ऑफर मिला था। ये बात तो पहले उनको पता थी। पता नहीं, इनकी कब से शुरुआत हो गई थी? रथ वगैरह तो सबने देख ही लिए थे। वो तो सब मालूम था कि ऐसा होना है।

घोषणा से पहले ही भार्गव के रथ बन गए थे

राजपूत ने कहा- संगठन कितनी भी दुहाई दे कि पहले से कन्फर्म नहीं था। सब पहले से कन्फर्म था। इसकी पुष्टि भी कई जगह से हो चुकी थी। बची कसर घोषणा के पहले रथों द्वारा हो गई।जैसे ही लगा कि ऐसा है तो कांग्रेस वालों ने मुझसे बहुत आग्रह किया कि आप चुनाव लड़ लो। मैंने साफ मना कर दिया कि नहीं भैया, मैं लडूंगा तो बीजेपी से ही चुनाव लडूंगा। कांग्रेस से बिल्कुल नहीं लडूंगा। साफ मना कर दिया कि मुझे पद लोलुपता नहीं हैं। न मुझे टिकट की लोलुपता है। जब मैंने कांग्रेस को मना कर दिया तो राजकुमार का टिकट घोषित हो गया।

म.प्र.के स्कूलों का सिलेबस किसने बदला

निगम बोला- हम आरटीआई के दायरे से बाहर; हाई कोर्ट ने कहा-जानकारी देना होगी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम को बताना होगा कि निगम की सिलेबस समिति और उसकी कार्य शैली क्या है। ब्रिटिश शासन के ज़माने में जानकारी छुपाने के लिए लाए गए ऑफिशियल सीक्रेट्स एक्ट वाली मानसिकता आज भी प्रचलन में है। सूचना का अधिकार कानून आने के 20 साल बाद भी संस्थान जानकारी देने से इनकार कर देते हैं, ये चिंताजनक है...ये कहना है आरटीआई लगाने वाले नितेश व्यास के वकील नित्यानंद मिश्र का। नितेश व्यास ने 2019 में पाठ्य पुस्तक निगम की सिलेबस समिति और उसकी कार्य शैली को लेकर आरटीआई लगाई थी, जिसके जवाब में पाठ्य पुस्तक

निगम ने खुद को सरकारी संस्थान ना बताते हुए जानकारी देने से इनकार कर दिया था। अब 5 साल बाद इस मामले में हाईकोर्ट ने पाठ्य पुस्तक निगम को जानकारी देने का निर्देश दिया है। इस मामले ने एक नई बहस को जन्म दिया है। आईये आपको बताते हैं पूरा मामला क्या है।

जिज्ञासावश लगाई आरटीआई-भोपाल में रहने वाले नीतेश व्यास बताते हैं कि एक दिन पाठ्य पुस्तक निगम और सिलेबस निर्धारित करने वाली समिति की कार्य शैली जानने का ख्याल आया, खोजबीन करने पर आरटीआई का ज़रिया उन्हें मिला। उन्होंने 2 मुख्य सवालों के साथ आरटीआई लगा दी, उन्होंने बताया कि 'आरटीआई में मैंने पाठ्यक्रम में संशोधन यानी रिव्यू समिति के सदस्यों की जानकारी मांगी। मैंने इस समिति की मीटिंग की जानकारी भी मांगी।'

ट्रक के पलटने के कारण बरेठा घाट में कई किमी तक लगा लंबा जाम

आज शुक्रवार को बरेठा घाट में लंबा जाम लग गया, यह जाम ट्रक के पलटने के कारण लगा, जाम लगने से कई किलोमीटर तक लंबी लाइन वाहनों की नेशनल हाइवे पर लग गई।

रीवा का सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, विंध्य अंचल के लिए आशा का केंद्र : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा का सुपर स्पेशलिटी अस्पताल विंध्य अंचल के लिए एक बड़ी आशा का केंद्र है, जहां गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए मरीज आते हैं। यहां पदस्थ चिकित्सकों द्वारा पूरी लगन के साथ उनका इलाज भी किया जा रहा है। यह अस्पताल हृदय संबंधी चिकित्सा के लिए प्रदेश में अपना स्थान बना रहा है। अस्पताल में हृदय रोग से संबंधित चिकित्सकीय उपकरणों की पूर्ति के लिए प्राथमिकता से प्रयास किये जा रहे हैं। अस्पताल में बिस्तरों की वृद्धि के लिए भी प्रावधान किये जा रहे हैं।

गंभीर बीमारियों के इलाज में बरतें अधिक तत्परता-उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल रीवा के चिकित्सकों को निर्देश दिए हैं कि गंभीर बीमारियों के इलाज में और अधिक तत्परता बरती जाये।

सफाई बेड़े को मिला मडपंप मशीन ट्रेक्टर स्वच्छ भारत मिशन के तहत

सुबह सवेरे सोहागपुर

नगर पंचायत परिषद सोहागपुर को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत नगर में खाली होने वाले सेप्टिक टैंकों की बढ़ती संख्या के अनुपात के आधार पर प्रदेश शासन ने नगर पंचायत परिषद को एक मडपंप मशीन ट्रैक्टर सहित उपलब्ध कराया है।इसका शुभारंभ नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल ने पूजन करके किया। उल्लेखनीय है कि प्रदेश शासन ने नगर पंचायत परिषद सोहागपुर को सेप्टिक टैंक खाली करने हेतु मंडपप एवं ट्रैक्टर क्रय करने के लिए राशि उपलब्ध करवाई थी। उसी राशि ट्रैक्टर एवं मड़पम्प मशीन क्रय की गई है।

नगरपालिका अधिकारी राकेश मिश्रा ने बताया कि नगर पंचायत परिषद के पास 2 मडपम्प हो गए हैं। इससे नागरिकों को सेप्टिक टैंक खाली कराने में आसानी होगी। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, पार्षद श्रीमती शोभा अहिरवार ,श्रीमती अमृता चौरसिया,श्रीमती कविता साहू, श्री आशीष मालवीय, अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल, पार्षद प्रतिनिधि जगदीश अहिरवार, राकेश चौरसिया, उपयंत्री आर.जी.चौबे, संजय पचौरी आदि उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने नवगठित तीन विश्वविद्यालयों के कुलगुरूओं को किया नियुक्त

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने प्रदेश के नवगठित विश्वविद्यालयों क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय खरगोन, क्रांतिवीर तात्या टोपे विश्वविद्यालय गुना और रानी अवन्तीबाई लोधी विश्वविद्यालय सागर के कुलगुरूओं की नियुक्ति कर दी है। तीनों कुलगुरूओं का कार्यकाल 4 वर्ष की कालावधि अथवा 70 वर्ष की आयु जो भी पूर्वतर हो रहेगा।

क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय, खरगोन के कुलगुरु डॉ. कोरी बने-राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय, खरगोन का कुलगुरु आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय भोपाल के फार्मेसी विभाग के निदेशक एवं सदस्य, पी.सी.आई., नई दिल्ली डॉ. मोहन लाल कोरी को नियुक्त किया है।

क्रांतिवीर तात्या टोपे विश्वविद्यालय, गुना के कुलगुरु डॉ. यादव बने-राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने क्रांतिवीर तात्या टोपे विश्वविद्यालय, गुना का कुलगुरु बुंदेलखण्ड पी.जी. कॉलेज, झांसी (उ.प्र.) के राजनीति विज्ञान विभाग एवं शोध केन्द्र के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. किशन यादव को नियुक्त किया है।

रानी अवन्तीबाई लोधी विश्वविद्यालय, सागर के कुलगुरु डॉ. मिश्रा बने-राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने रानी अवन्तीबाई लोधी विश्वविद्यालय, सागर का कुलगुरु प्रोफेसर जी.एस. कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड इकॉनॉमिक्स, जबलपुर (म.प्र.) डॉ. विनोद कुमार मिश्रा को नियुक्त किया है।

सीएम हेल्पलाइन सितम्बर ग्रेडिंग में जनपद पंचायत प्रदेश में प्रथम रही

सुबह सवेरे सोहागपुर

जनपद पंचायत सोहागपुर सीएम हेल्पलाइन सितंबर की ग्रेडिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। जनपद सीईओ संजय अग्रवाल ने बताया कि सीएम हेल्पलाइन में आने वाले आवेदनों और शिकायतों के संबंध में जनपद पंचायत सोहागपुर एवं जनपद के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायतों द्वारा पूरी तत्परता से सभी शिकायतों का निराकरण किया जा रहा है। इसी कारण सितंबर माह की ग्रेडिंग में जनपद पंचायत सोहागपुर पूरे प्रदेश की 313 जनपद पंचायतों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उक्त ग्रेडिंग कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना नर्मदापुरम

एवं सीईओ जिला पंचायत सुजानसिंह रावत की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से संभव हुआ है। आपने आगे बताया कि सभी ग्राम पंचायतों को लगातार प्रेरित किया जा रहा है। कि ग्राम पंचायत में आमजन से आने वाली शिकायतों एवं मांगों का निराकरण तेजी से किया जाए। जिसमें अधिकांश सरपंच ,सचिव एवं ग्राम रोजगार सहायक तथा सभी पीसीओ, उपयंत्री एवं योजनाओं के प्रभारी पूरा सहयोग भी कर रहे हैं। इसी कारण पहली बार उक्त सराहनीय कार्य संभव हो पाया है। उल्लेखनीय है कि जनपद पंचायत में सीएम हेल्पलाइन के प्रभारी ऋषि पटेल, खंड समन्वयक प्रधानमंत्री आवास की भूमिका प्रशंसनीय रही है। आपने जनता-जनार्दन को आश्वस्त किया है कि जनता की समस्याओं का निराकरण त्वरित गति से करके प्रदेश में अग्रणी बने रहेंगे।

उज्जैन में कार और टैंकर में टक्कर, 4 की मौत

ड्राइवर का शव निकालने काटनी पड़ी गाड़ी ; अजमेर से जियारत कर लौट रहे थे

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के पास नागदा में शुक्रवार तड़के करीब 5:30 बजे कार और टैंकर की टक्कर हो गई। हादसे में कार सवार 4 लोगों की मौत हो गई, जबकि 3 घायल हैं। सभी मृतक इंदौर के रहने वाले थे। वे अजमेर से जियारत कर लौट रहे थे। जावरा-नागदा रोड पर बेड़ावन्या गांव के पास एक्सीडेंट हो गया।

टक्कर इतनी भीषण थी कि इनोवा के परखच्चे उड़ गए। ड्राइविंग सीट पर फंसे शव को निकालने के लिए कार काटनी

पड़ी।कार में सवार ऐजाज को कोई चोट नहीं लगी है। ऐजाज ने बताया- हम आठ लोग इंदौर से 23 अक्टूबर को अजमेर के लिए निकले थे। शुक्रवार सुबह लौटते वक्त एक पेट्रोल टैंकर और एक ट्रक हमारी गाड़ी के पीछे थे। कुछ देर बाद टैंकर ने हमारी कार को ओवरटेक किया। इसी दौरान गाड़ी टैंकर से जा भिड़ी।

हादसे में इनकी गई जान

1. इमरान पुत्र इज्जत नूर, 40 साल, निवासी कड़ाव घाट, इंदौर
2. आसिफ पुत्र अहमद मंसूरी, 35 साल, निवासी पिंजारा बाखल, इंदौर
3. अब्दुल मन्नान पुत्र अब्दुल गफ्फार, निवासी झलारिया, इंदौर
4. समीर पुत्र हाजी हफीज खान, निवासी झलारिया, इंदौर

ये हुए घायल

1. जुबैर पुत्र जाकिर, 30 साल, इंदौर
2. समीर पुत्र रशीद, 25 साल, निवासी सांवेर, इंदौर
3. ओसामा पुत्र सिद्दीक, 25 साल, निवासी सांवेर, इंदौर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से मिले फ्रांस के महावाणिज्य दूत श्री जीन मार्कसेरे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से शुक्रवार शाम को फ्रांस के महावाणिज्य दूत श्री जीन मार्कसेरे ने मध्य प्रदेश प्रवास के दौरान समत्व भवन, मुख्यमंत्री निवास आकर सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री मार्कसेरे से मध्यप्रदेश में व्यापार, वाणिज्य और उद्योग क्षेत्र में फ्रांस द्वारा निवेश की संभावनाओं पर चर्चा की। प्रारंभ में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री मार्कसेरे का अंगवस्त्रम् से स्वागत किया और स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

11वीं वेस्ट जोन शूटिंग चैम्पियनशिप में खेल अकादमी के नवनीत और ओष्मी ने जीते 2-2 स्वर्ण पदक

भोपाल (नप्र)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने खेल अकादमी के 2 होनहार खिलाड़ियों द्वारा 4 स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई और शुभकामनाएं दी है। उन्होंने खिलाड़ियों की इस उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा खेल अकादमी के शूटर अपनी प्रतिभा से प्रदेश का गौरव बढ़ा रहे हैं।भोपाल के गोरेगांव स्थित मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग अकादमी में 25 अक्टूबर को स्कीट इवेंट के साथ 11वीं वेस्ट जोन शूटिंग चैम्पियनशिप शॉटगन का समापन हुआ। 20 से 25 अक्टूबर तक आयोजित इस प्रतियोगिता के अंतिम दिन खेल अकादमी के श्री नवनीत सिंह भदौरिया और ओष्मी श्रीवास्तव ने जूनियर एवं सीनियर वर्ग में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 2-2 स्वर्ण पदक सहित कुल 4 पदक जीतकर प्रदेश का मान बढ़ाया।

पर्यटन को बढ़ावा देने की कवायद, खेरवाड़ा से शुरुआत

आदिवासी परिवार के घर में रुक प्रकृति को निहारेंगे देशभर के ट्रैकर्स

आलीराजपुर (नप्र)। आदिवासी संस्कृति को करीब से जानने और प्रदेश के अनछुए प्राकृतिक स्थलों को खोजने के लिए देशभर के अनुभवी ट्रैकर अब आलीराजपुर की सैर पर आएंगे। मुंबई, पुणे, बेंगलुरु, वड़ोदरा, जयपुर, दिल्ली, चेन्नई जैसे स्थानों से 15 ट्रैकर्स 25 अक्टूबर को यहां आएंगे। वे तीन दिन तक खेरवाड़ा और नर्मदा डूब क्षेत्र के ग्राम चिलकदा में रहकर ट्रैकिंग करेंगे।

जिला प्रशासन ने इंडिया हाइक के सहयोग से यह पहल की है। जल्द यहां वाटर स्पोर्ट्स की शुरुआत भी की जाएगी। उन्हें उम्मीद है कि इससे जिले में पर्यटन बढ़ेगा और क्षेत्र के लोगों को रोजगार भी मिलेगा। सोंडवा विकासखंड के पहाड़ी क्षेत्र खेरवाड़ा से ट्रैकिंग की शुरुआत की जा रही है।

इनमें 8 पुरुष और 7 महिला पर्यटक शामिल हैं, जो खेरवाड़ा में होम स्टे करेंगे। इनके लिए देवला भयड़िया के घर

में रुकने का इंतजाम किया गया है। इंडिया हाइक इसके लिए उन्हें भुगतान भी करेगा। खेरवाड़ा में पहले तीन 3 किमी का ट्रैक किया जाएगा। 26 अक्टूबर को नर्मदा के डूब क्षेत्र चिलकदा जाएंगे, यहां सभी कैंपिंग करेंगे। 27 अक्टूबर को नदी किनारे ट्रैकिंग की जाएगी।

ये एमपी का दूसरा ट्रैक, पहला पैंच में

इंडिया हाइक के चीफ एक्सप्लोरर नितेश कुमार ने बताया, खेरवाड़ा से ट्रैकिंग पायलेट ग्रुप के रूप में शुरुआत कर रहे हैं। यह ट्रैक मध्यप्रदेश का दूसरा ट्रैक है। पहला ट्रैक पैंच में मोगली ट्रैक के नाम से है। दूसरा ट्रैक आलीराजपुर में नर्मदा बैक वॉटर्स ट्रैक के नाम से शुरू किया है। एमपी टूरिज्म के साथ मिलकर हमने आलीराजपुर के जितने भी फॉरेस्ट एरिया है वहां ट्रैक की संभावना तलाशी थी। इसमें से खेरवाड़ा, चिलकदा को चुना गया है।

ट्रैक से आलीराजपुर का यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय पर्यटन नक्शे पर आ जाएगा। लगभग 50 से 100 लोगों को सीधे रोजगार मिलेगा। ट्रैक की शुरुआत 25 अक्टूबर से हो रही है। होम स्टे की व्यवस्था खेरवाड़ा में एक आदिवासी परिवार के घर पर की गई है।

वीरेंद्र बघेल, नोडल अधिकारी
जिला पर्यटन सोसायटी,
आलीराजपुर

बंधक बनाए हाथियों को एक साथ होम रेंज में छोड़ें

छत्तीसगढ़ से आए दो हाथी एमपी के टाइगर रिजर्व में बंधक; एसीएस को लिखी चिट्ठी

भोपाल (नप्र)। छत्तीसगढ़ से आए दो नर हाथियों को शहडोल और अनूपपुर से पकड़ कर कान्हा टाइगर रिजर्व और बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बंधक रखने के बाद अब इन्हें हाईकोर्ट की फटकार के बाद छोड़ने की तैयारी है। इन दोनों ही हाथियों को वन विभाग द्वारा एक साथ छोड़ने के बजाय अलग-अलग छोड़ने का फैसला किया गया है, जिसे हाथी के स्वभाव के विपरीत बताते हुए सरकार से एक साथ होम रेंज में छोड़ने की बात कही गई है। वन्यजीव प्रेमी और आरटीआई एक्टिविस्ट अजय दुबे ने कहा है कि अलग-अलग छोड़ना हाथियों के साथ अन्याय होगा, क्योंकि ये परिवार के रूप में रहते हैं। इसको लेकर दुबे ने वन महकमे को पत्र भी लिखा है।

होम रेंज में छोड़ा जाए

एल्सा फाउंडेशन ने सुझाव दिया है कि जैसे ही दूसरे हाथी की चोटें ठीक होती है, तब दोनों हाथियों को एक ही समय में एक ही ऑपरेशन में उनकी होम रेंज में छोड़ा जाये। दोनों हाथी पकड़े जाने से पहले एक साथ थे, इसलिए उनका बहुत करीबी संबंध है। उन्हें एक साथ छोड़ने से हाथियों का अस्तित्व और कल्याण होगा। कैद और क्रूर तरीके से बंधक बनाने के कारण सौम्य और दिग्गज वन्यप्राणियों को आजीवन आघात पहुंचता है।

दुबे ने बताया कि 2 मार्च 2024 को उत्तर शहडोल वन मण्डल से दस साल के एक नर हाथी को पकड़ के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के रामा हाथी कैंप में रखा गया है। 25 साल के दूसरे हाथी को 25 फरवरी 2024 को अनूपपुर वन मण्डल से पकड़ कर किसली हाथी कैंप कान्हा टाइगर रिजर्व में रखा गया है। इनको वापस छोड़े जाने को लेकर जबलपुर हाई कोर्ट में लंबित एक जनहित याचिका लगाई गई। इस पर कोर्ट द्वारा जानकारी तलब करने पर मध्य प्रदेश वन विभाग ने कोर्ट को बताया है कि वह बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में रखे एक हाथी को छोड़ देगा और दूसरे हाथी को जंजीरों से बांधने के कारण चोटें आ गई है, उसे ठीक होते ही छोड़ देंगे। दुबे ने बताया कि उनकी जानकारी के अनुसार दूसरे हाथी की चोटें ठीक हो गई हैं।

एल्सा फाउंडेशन ने लिखा है पत्र

एल्सा फाउंडेशन के संस्थापक प्रकाश ने इसको लेकर लिखे पत्र में कहा है कि वन विभाग द्वारा गठित समिति की रिपोर्ट से पता चला है कि दोनों हाथियों को अलग-अलग वन क्षेत्र (उसके गृह क्षेत्र से दूर) में छोड़ने की योजना बनाई गई है। वन विभाग की समिति ने लिखा है कि यदि पहले हाथी की रिहाई विफल हो जाती है तो उस हाथी को फिर से पकड़ा कर कैद में रखा जाएगा। एल्सा ने लिखा है कि एक अपरिचित वन क्षेत्र में एक हाथी को छोड़ने के दुखद परिणाम होते हैं। ऐसे छोड़ना हाथी के लिए अत्यधिक क्रूर और दर्दनाक होता है। अफ्रीका में, स्थानांतरण हमेशा संबंधित और संबद्ध हाथियों के बड़े समूहों में किया जाता है। अकेले हाथियों का स्थानांतरण कभी नहीं किया जाता। इनकी ओर से सुझाव दिया गया है कि एक साथ छोड़ने से हाथियों का अस्तित्व और कल्याण होगा।

राज्य संग्रहालय में गोबर शिल्प कार्यशाला का आयोजन

इस दिवाली गोबर से बने प्रोडक्ट से सजाए घर; मांडना और तोरण की खास डिमांड

भोपाल (नप्र)। भारतीय संस्कृति में गोबर का खास महत्व है, गोबर से कई तरह के सजावटी और घर में उपयोग होने वाले जरूरी सामान बनाए जाते हैं। भोपाल के डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरातत्व शोध संस्थान ने गोबर से जुड़े स्वदेशी सामानों को बढ़ावा देने के लिए राज्य संग्रहालय परिसर श्यामला हिल्स में गोबर शिल्प कला वर्कशॉप का आयोजन किया है। यह कार्यशाला 23 से 25 अक्टूबर तक जारी रहेगी।

इस 3 दिवसीय प्रशिक्षण, बिक्री और प्रदर्शन का आज अंतिम दिन है। इसमें गोबर से बने कई स्वदेशी सामानों की प्रदर्शनी और बिक्री की गई। कार्यशाला में गोबर शिल्पकारों की ओर से दिव्यांग कला घर समिति और गोबर लीला गोबर शिल्प संस्थान ने स्टॉल लगाए हैं।

प्रशिक्षण में कई विद्यार्थी हुए शामिल

संचालनालय की ओर से शहर के विभिन्न कला संस्थानों के विद्यार्थी और हर उम्र के कला से जुड़े लोगों के लिए गोबर शिल्प प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। कई कलाप्रेमी, समाजसेवी और कलाकारों ने प्रदर्शनी को देखा और उसमें भाग लिया। इसके अलावा कई छात्र-छात्राओं ने गोबर शिल्प कार्यशाला में भाग लेकर गोबर से जुड़े सामान बनाने का प्रोसेस जाना।

गोबर से बनी इन चीजों की हो रही बिक्री- गोबर शिल्पी सुरेश राठौर के मुताबिक गोबर से जुड़े इन सामानों को बनाने के लिए दोनों समितियों ने दीपावली को ध्यान में रखते हुए कई तरह की चीजों को बनाया है। प्रोडक्ट की बात करें तो इनमें वंदनवार, झूमर, कलश हैं। जिन्हें घर में सजाने के लिए रखा जा सकता हैं। साथ ही ड्राइंग रूम को सजाने के लिए गोबर की घड़ी, मोबाइल स्टैंड और कई तरह के फोटो फ्रेम हैं।

'लंबे समय तक टिकाऊ होते हैं ये सामान'- गोबर शिल्पी राजेश राठौर के मुताबिक गोबर से बने सभी सामानों की अवधि लकड़ी के सामानों की तरह लंबे समय तक रहती है। यह न केवल घर की सुंदरता को बढ़ाता है बल्कि आकर्षित भी करता है।

भोपाल में रेलवे और सांसदों की बैठक

यात्रियों की सुविधा के लिए रखी मांग

मुंबई के लिए नई ट्रेन चलाने दिया सुझाव

भोपाल(नप्र)। शुक्रवार पश्चिम मध्य रेलवे जोन के रेल मंडल की बैठक सांसदों के साथ भोपाल के ताज होटल में आयोजित की गई। प्रदेश के 7 सांसद जिसमें ग्वालियर से भारत सिंह कुशवाहा, भोपाल आलोक शर्मा, खंडवा ज्ञानेश्वर पाटिल, देवास महेंद्र सिंह सोलंकी, नर्मदापुरम दर्शन सिंह चौधरी, सागर डॉ. लता वानखेड़े और राज्यसभा सांसद माया नारोलिया शामिल रहीं। वहीं रेलवे की तरफ से पश्चिम मध्य रेलवे की जीएम शोभना बांदोपाध्याय, डीआरएम देवाशीष त्रिपाठी, सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया मौजूद रहें।

निशातपुरा से मुंबई के लिए नई ट्रेन चलाने का सुझाव- सांसद आलोक शर्मा ने बताया कि हमने यहां पर कई तरह की मांगे और सुझाव रखे हैं। मालवा एक्सप्रेस को भोपाल की बजाय निशातपुरा स्टेशन से चलाने की मांग की है, इसके अलावा निशातपुरा स्टेशन को लेकर भी हमारी चर्चा हुई है, जल्द ही इसे भोपाल की जनता के लिए शुरू किया जाएगा। इसके अलावा यहां से महाराष्ट्र या मुंबई के लिए एक ऑप्शनल ट्रेन चलाने की बात भी की है। यह ट्रेन जो संत हिरदाराम नगर, सीहोर, सूरत के रास्ते महाराष्ट्र जाएगी क्योंकि लगातार हमारे पास सुझाव आ रहे थे। मुंबई जाने के लिए इटारसी-खंडवा होते हुए

जाना पड़ता था। कई बार इस रूट पर मेंटेनेंस कार्य चलते हैं। जिससे ट्रेन भी लेट होती हैं। इस तरह से एक नया वैकल्पिक रूट भी मुंबई के लिए भोपाल से तैयार हो सकेगा। उन्होंने कहा कि जल्द ही मैं रेलवे अधिकारियों के साथ निशातपुरा स्टेशन का निरीक्षण करूंगा।

आलोक शर्मा ने कहा कि लंबे समय से बैरसिया के लिए रेलवे लाइन की बात चल रही है, हमारी इस संबंध में भी रेलवे से चर्चा हुई है। बैरसिया रेलवे लाइन का सर्वे जल्द से जल्द करवाए, आलोक शर्मा ने बताया कि हमें उम्मीद है कि रेलवे इस सर्वे का काम जल्द शुरू करेगा। वहीं भोपाल से लखनऊ के लिए एक चेयर कार वंदे भारत और भोपाल से बिहार के लिए भी एक स्लीपर वंदे भारत का सुझाव भी मैंने दिया है। वहीं सीहोर से सीधे प्रयागराज जाने वाली ट्रेनों को भी सीहोर हॉल्ट की बात भी रखी है।

भोपाल एक्सप्रेस को मथुरा में मिले हॉल्ट, पुणे के लिए रोजाना ट्रेन शुरू- आलोक शर्मा ने बताया कि मथुरा जाने वाले यात्रियों के लिए भोपाल एक्सप्रेस को मथुरा पर हॉल्ट देने की बात हमने कही है, इसके लिए हम प्रयागराज भी जाएंगे। वहां के रेलवे अधिकारियों से इस सबंध में भी चर्चा करेंगे। वहीं पुणे, बेंगलुरु के लिए भी रोजाना एक ट्रेन चलाने को लेकर सुझाव दिया है क्योंकि जो ट्रेन पुणे जाती है वह वीकली ट्रेन है। हमारे यहां से बहुत सारे नौजवान पुणे में काम करते हैं, उनको आने जाने में अधिकतर सीट उपलब्ध नहीं होती है। रोजाना ट्रेन चलेगी तो यह समस्या दूर हो जाएगी। वहीं भोपाल से इटारसी मैमू ट्रेन चलाने का प्रस्ताव भी हमने रखा है।देवास सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी ने शाजापुर से 2 नई ट्रेनों की मांग की ।

शाजापुर से दो नई ट्रेन की रखी मांग- देवास सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी ने बताया कि मैंने शाजापुर से दो नई ट्रेन चलाने की मांग रखी है, इसमें एक ट्रेन मुजफ्फरपुर और दूसरी बांद्रा टर्मिनल के लिए हो। अमृत भारत स्टेशन का काम भी बहुत तेजी के साथ चल रहा है, इसका निर्माण कार्य बहुत गुणवत्ता पूर्ण है। अमृत भारत योजना प्रधानमंत्री की महत्वपूर्ण योजना है।

मध्य प्रदेश अधिकारी-कर्मचारी संयुक्त मोर्चा का प्रदर्शन

वक्ताओं ने कहा-कर्मचारियों के साथ सरकार का यह बर्ताव बर्दाश्त करने लायक नहीं

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय कर्मचारियों के समान 7 प्रतिशत महंगाई भत्ता और पेंशनरों के लिए महंगाई राहत, पदोन्नति, 7वें वेतनमान के अनुसार वाहन एवं गृहभाड़ा भत्ता देने सहित अन्य मांगों को लेकर सतपुड़ा भवन के सामने मध्य प्रदेश अधिकारी-कर्मचारी संयुक्त मोर्चा ने प्रदर्शन किया। कर्मचारियों ने जमकर नारेबाजी की और मंत्रालय से होते हुए विंध्याचल भवन तक रैली भी निकाली। यहां सभा आयोजित की गई, जिसमें कर्मचारियों ने सरकार पर उपेक्षा के आरोप लगाए।

मोर्चा के सभी घटक संगठनों के कर्मचारी प्रदर्शन में शामिल हुए। सभी संगठनों के अध्यक्षों ने एक स्वर में कहा कि यह विरोध सरकार की गलत नीतियों के कारण हो रहा है। पड़ोसी राज्यों ने दीपावली से पहले डीए और बोनस दे दिया है और मध्य प्रदेश में सरकार को कर्मचारियों की परवाह तक नहीं है। इस कारण कर्मचारियों को काली दीपावली मनाने को मजबूर होना पड़ रहा है। वक्ताओं ने साफ कहा कि कर्मचारियों के साथ सरकार का यह बर्ताव बर्दाश्त करने लायक नहीं है। सरकार कर्मचारियों पर ध्यान नहीं देती है, तो यह लड़ाई आगे तक जाएगी।

कर्मचारियों की प्रमुख मांगें ....

- केंद्र के समान और केंद्रीय तिथि से महंगाई भत्ता दिया जाए।
- वाहन भत्ता और गृहभाड़ा भत्ता में बढ़ोत्तरी की जाए।
- साढ़े आठ साल से बंद पदोन्नति शुरू की जाए।
- लिपिकों की वेतन विसंगति दूर की जाए।
- अनुकंपा नियुक्ति में आए लिपिकों को सीपीसीटी करने के लिए समय दिया जाए।
- चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को 1800 ग्रेड-पे दी जाए।
- 45000 स्थाईकर्मियों को नियमित किया जाए।
- 20000 अंशकालीन कर्मचारियों का वेतन बढ़ाया जाए।
- 4.50 लाख पेंशनर्स को धारा 49 के कारण समय पर पेंशन का भुगतान एवं महंगाई भत्ता के एरियर्स का भुगतान नहीं हो पा रहा है, इसे खत्म किया जाए।

पर्यटन-संस्कृति को बढ़ावा देंगे एमपी और फ्रांस

भोपाल पहुंचे महावाणिज्य दूत; टूरिस्ट गाइड, फिल्म प्रमोशन-सांस्कृतिक आयोजनों पर चर्चा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश और फ्रांस पर्यटन और संस्कृति को मिलकर बढ़ावा देंगे। शुक्रवार को फ्रांस के महावाणिज्य दूत जो. मार्क सेरे शार्ले भोपाल पहुंचे और टूरिज्म बोर्ड की अपर प्रबंध संचालक बिदिशा मुखर्जी से मुलाकात की। फिल्म प्रमोशन, सांस्कृतिक आयोजन और टूरिस्ट गाइड को लेकर बातचीत की गई।

मुंबई में फ्रांस के महावाणिज्य दूत शार्ले ने कहा कि, फ्रांस एम्बैसी मप्र पर्यटन विभाग के साथ मिलकर संस्कृति एवं पर्यटन के क्षेत्र में कार्यों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करेंगे। उनके साथ ग्रिगोर त्रिमोरे, एमिली जैकमॉ, संस्कृति विभाग के निदेशक एनपी नामदेव सहित टूरिज्म बोर्ड के अधिकारी मौजूद थे। चर्चा के दौरान प्रदेश के गाइड

को फ्रेंच भाषा में पारंगत बनाना, प्रदेश के सांस्कृतिक आयोजनों में फ्रांस के कलाकारों को प्रस्तुति का मौका देना, फ्रांस में मप्र के पर्यटन गंतव्यों को प्रमुखता से प्रचारित देने जैसे बिंदुओं पर चर्चा की गई।

गाइडों को फ्रेंच भाषा की ट्रेनिंग देंगे

अपर प्रबंध संचालक मुखर्जी ने बताया, मध्यप्रदेश के गाइडों को फ्रांस की एम्बेसी की सहायता से फ्रेंच भाषा में प्रशिक्षित किया जाएगा। ताकि वे फ्रांसीसी पर्यटकों को सहजता से गाइड कर सकें और उनकी पर्यटन यात्रा को सुगम बना सकें। टूरिज्म बोर्ड द्वारा फिलहाल 19 गाइड को फ्रेंच भाषा का प्रशिक्षण दिया गया है। अब इसके एक कदम आगे बढ़ते हुए पर्यटन विभाग के होटल्स एवं रिसोर्ट्स में कार्यरत फ्रंट ऑफिस एक्जिक्यूटिव, रिसेप्शनिस्ट सहित अन्य हितग्राहियों को फ्रेंच भाषा में पारंगत बनाने के लिए एम्बेसी के साथ कार्य किया जाएगा। मुखर्जी ने फ्रांस के फिल्म निर्माता-निर्देशकों को मप्र में फिल्म शूटिंग के लिए आमंत्रित किया।

फ्रांस के कलाकारों को आमंत्रित करेंगे- फ्रांस के कलाकारों को मध्यप्रदेश में आयोजित होने वाले प्रमुख आयोजनों में आमंत्रित किया जाएगा। वहीं मध्यप्रदेश के कलाकार भी फ्रांस में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हिस्सा बनेंगे। आगामी तानसेन समारोह के 100वें संस्करण में फ्रांस के कलाकार विशेष प्रस्तुतियां देंगे, जो समारोह में एक नया और अनूठा आकर्षण जोड़ेंगी। उन्होंने कहा, फ्रांस के प्रमुख टूर ऑपरेटर्स और ट्रेवल एजेंट्स को मध्यप्रदेश के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर आमंत्रित किया जाएगा। इसके माध्यम से फ्रांस से आने वाले पर्यटकों को मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों की विविधता और आकर्षण से रूबरू कराया जाएगा।

चक्रवाती तूफान 'दाना' का एमपी में 2 दिन रह सकता है असर

इस हफ्ते जबलपुर समेत 8 जिलों में बारिश; भोपाल-इंदौर में धूप

भोपाल (नप्र)। चक्रवाती तूफान 'दाना' का मध्यप्रदेश में 2 दिन असर देखने को मिलेगा। मौसम विभाग ने 26 और 27 अक्टूबर को प्रदेश के पूर्वी हिस्से में जबलपुर समेत 8 जिलों में गरज-चमक और हल्की बारिश का अनुमान जताया है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर समेत बाकी शहरों में धूप खिली रहेगी। तूफान के असर से प्रदेश में हवा की रफ्तार भी तेज होगी। अभी कई शहरों में हवा की गति 25 से 39 किमी प्रति घंटा तक है।

कई शहरों में दिन का पारा 30 डिग्री से कम- गुरुवार को दिन में कई शहरों का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से कम दर्ज किया गया। दिन में पचमढ़ी सबसे ठंडा रहा। पचमढ़ी में 25.8 डिग्री, बैतूल में 28.2 डिग्री और मलाजखंड में 27.5 डिग्री पारा दर्ज हुआ। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 31 डिग्री, इंदौर में 31.4 डिग्री, ग्वालियर में 34 डिग्री, उज्जैन में 32 डिग्री और जबलपुर में 31 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया।

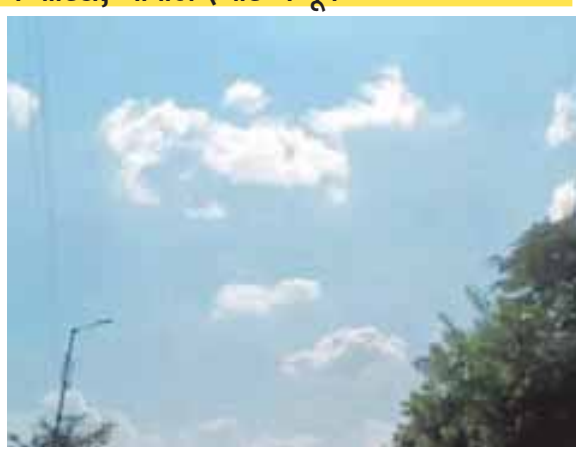

पति के साथ पिकनिक गई महिला से गैंगरेप

शराब पार्टी के बाद बंधक बनाया, पत्नी के वीडियो बनाए; एफआईआर के लिए भटकते रहे पीड़ित

रीवा (नप्र)। रीवा में पति के साथ पिकनिक पर गई महिला के साथ 4-5 लोगों ने गैंगरेप किया। आरोपियों ने पहले शराब पी, लिट्टी चोखा खाया और इसके वीडियो शूट किए। फिर पिकनिक पर गए दंपती पर टूट पड़े। पति को पेड़ से बांधकर मारपीट की। महिला से गैंगरेप किया और इसका वीडियो भी बनाया। सोमवार की इस घटना की एफआईआर कराने दंपत्ति थाने के चक्कर काटते रहे। पुलिस ने मंगलवार को शिकायत दर्ज की।

दंपत्ति ने पुलिस को बताया कि वे दोनों कॉलेज में साथ पढ़ते थे। उनकी कुछ दिन पहले ही शादी हुई है। 21 अक्टूबर को पिकनिक के लिए भैरव बाबा क्षेत्र में गए थे। यहां 5 लोगों ने उन्हें घेर लिया। सभी नशे में थे। वारदात के बाद आरोपियों दंपत्ति को धमकाते हुए कहा पुलिस के पास गए तो वीडियो वायरल कर देंगे।

मामले में कांग्रेस ने आरोप लगाया कि सोमवार को वारदात के बाद पीड़ित दंपत्ति थाने के चक्कर लगाते रहे, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई।

रीवा एसपी विवेक सिंह ने बताया कि घटना 21 अक्टूबर की दोपहर की है। पीड़िता 22 अक्टूबर की दोपहर थाने पहुंची। पुलिस ने तत्काल केस दर्ज कर लिया।

आरोपी बोला- गांजा और शराब के नशे में

थे- एक आरोपी ने पुलिस पूछताछ में बताया, 21 अक्टूबर को हम 5 लोग गुढ़ के पास स्थित भैरव बाबा के मंदिर गए थे। यहां नहाने के बाद हमने खाना बनाया। साथियों ने मुझे गांजा और शराब पिला दी। मैं बहुत ज्यादा नशे में था। कुछ देर बाद लड़का-लड़की बाइक से आए। वे एक बड़ी सी चट्टान के पीछे चले गए। इसके बाद हमने लड़की के साथ गलत काम किया। बाद में लड़की मेरे पास आई और बोली- मेरा मोबाइल दिलवा दो। मैंने अपने साथी से छीनकर उसका मोबाइल दिया।

इसी चट्टान के पीछे आरोपियों ने महिला से दुष्कर्म किया था। आरोपियों ने मोबाइल में वीडियो पिकनिक स्पॉट के वीडियो बनाए थे।

कमलनाथ बोले- प्रदेश को अपराधियों के सुपुर्द किया- मध्यप्रदेश में दुष्कर्म की बढ़ती वारदातों के बावजूद सरकार का ध्यान कहीं और है। बहन-बेटियों का घर से निकलना दूभर हो गया है। पुलिस प्रशासन कानून-व्यवस्था बनाए रखने में नाकाम साबित हो रहे हैं। मुख्यमंत्री जो कि खुद गृहमंत्री भी हैं, प्रदेश को अपराधियों के हाथों सुपुर्द कर चुके हैं।

मैं सरकार से मांग करता हूं कि दुष्कर्म की वारदातों को रोकने के लिए पुलिस और सामाजिक संगठनों के संयुक्त प्रयास से कारगर योजना बनाएं। सूचना/खुफिया तंत्र को मजबूत करते हुए घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने की पहल करें।

पटवारी बोले- गृह विभाग की जगह जंगल राज विभाग बनाना चाहिए- पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने अपने एक्स अकाउंट पर रीवा रेप मामले को लेकर वीडियो शेयर किया है। वीडियो में उन्होंने

कहा, रीवा में कितनी भयावहता है। मध्यप्रदेश में 18-20 बेटियों से रोज रेप होता है। रीवा में इन्वेस्टर मीट थी, तभी पति को बांधकर उसके सामने पत्नी का रेप किया। ये बात दो दिन तक पब्लिक के सामने नहीं आई, भयावहता इसकी है। तो ये जंगल राज नहीं है तो क्या है?